सुसमाचार

अध्याय
तीन

मरकुस रचित सुसमाचार

THIRD MILLENNIUM
MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2012 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ की सेवकाई के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

हमारा लक्ष्य संसारभर के हजारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसारभर के सैंकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडिओ अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती है और हमारे अध्यायों के अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती है, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं के टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों, संस्थानों, व्यापारों और लोगों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय 1

पृष्ठभूमि 1

लेखक 1

पारम्परिक दृष्टिकोण 1

व्यक्तिगत इतिहास 3

मूल पाठक 4

आरम्भिक कलीसिया की गवाही 4

सुसमाचार के विवरण 5

अवसर 6

तिथि 6

उद्देश्य 7

संरचना एवं विषय-सूची 8

मसीहा की घोषणा 9

मसीहा की सामर्थ 10

परिचय 10

कफरनहूम के निकट 11

गलील का क्षेत्र 13

गलील के पार 14

प्रेरितों द्वारा मसीहा की पुष्टि 17

कष्ट सहने वाला मसीहा 18

तैयारी 18

सामना 20

अनुभव 22

मसीहा की विजय 23

प्रमुख विषय 24

कष्ट सहने वाला दास 25

यहूदी अपेक्षाएँ 25

यीशु की सेवकाई 26

उपयुक्त प्रत्युत्तर 28

विजय प्राप्त करनेवाला राजा 31

राज्य की घोषणा की 31

सामर्थ एवं अधिकार का प्रदर्शन किया 32
शत्रुओं पर जय प्राप्त की.................................... हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ.................. 33
उपसंहार 35

सुसमाचार

अध्याय तीन

मरकुस रचित सुसमाचार

परिचय

प्रतिदिन, हजारों मसीही केवल इस कारण सताव सहते हैं क्योंकि वे मसीह का अनुसरण करते हैं। हर दिन, लाखों विश्वासी अपनी संपत्तियों को खोने; अपने अगुवों की पिटाई और उनकी गिरफ्तारी; अपने परिवारों की हानि, अपहरण, या हत्या तक की संभावनाओं का सामना करते हैं।

वास्तव में, मरकुस के मन में मसीहियों का सताव था जब उसने वह लिखा जो आज नये नियम का दूसरा सुसमाचार, मरकुस का सुसमाचार है। आरम्भिक मसीही कलीसिया ने कई प्रकार से कष्ट सहा था। परन्तु विश्वासियों को अपने कष्ट का महत्व किस प्रकार समझना था? यीशु का उदाहरण उनकी कठिनाईयों के बारे में उन्हें क्या सिखा सकता था? मरकुस ने इस प्रकार के प्रश्नों का जवाब यीशु के जीवन की कहानी को इस प्रकार बताने के द्वारा दिया जिसने आरम्भिक मसीहियों के विश्वास को बल दिया और उन्हें स्थिर रहने के लिए प्रोत्साहित किया।

यह सुसमाचार की हमारी श्रंखला का तीसरा अध्याय है और हमने इसे "मरकुस के अनुसार सुसमाचार" शीर्षक दिया है। इस अध्याय में, हम यीशु के जीवन के बारे में मरकुस के अभिलेख को निकटता से देखेंगे ताकि हम उसकी शिक्षाओं को हमारे आधुनिक जीवनों में अधिक प्रभावी रूप से लागू कर सकें।

मरकुस के सुसमाचार का हमारा अध्ययन तीन मुख्य भागों में विभाजित होगा। पहला, हम मरकुस के सुसमाचार की पृष्ठभूमि पर विचार करेंगे। दूसरा, हम उसकी संरचना और विषय-सूची को देखेंगे। और तीसरा, हम उसके कुछ प्रमुख विषयों को देखेंगे। आइए हम मरकुस के सुसमाचार की पृष्ठभूमि से आरंभ करते हैं।

पृष्ठभूमि

हम लेखक मरकुस, उसके मूल श्रोताओं, और उसकी रचना के अवसर या परिस्थितियों पर विचार करने के द्वारा मरकुस के सुसमाचार को देखेंगे।

लेखक

हम मरकुस के सुसमाचार के लेखन को दो भागों में देखेंगे। पहला, हम इसके लेखन के पारम्परिक दृष्टिकोण को देखेंगे। और दूसरा, हम लेखक के व्यक्तिगत इतिहास को देखेंगे। आइए हम इस सुसमाचार के लेखन पर पारम्परिक दृष्टिकोण से आरम्भ करें।

पारम्परिक दृष्टिकोण

आरम्भिक कलीसियाई परम्परा सर्वसम्मति से मानती है कि मरकुस के सुसमाचार को यूहन्ना मरकुस द्वारा लिखा गया था। जब हम नये नियम में देखते हैं, यूहन्ना मरकुस का वर्णन बरनबास के चचेरे भाई के रूप में किया गया है। वह प्रेरितों के काम की पुस्तक

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> में पहली मिशनरी यात्रा पर पौलुस और बरनबास के साथ था। उसकी माता के बारे में बताया गया है कि उसका यरूशलेम में एक घर था जहाँ आरम्भिक चेले मिला करते थे। पतरस अपनी एक पत्री में यूहन्ना मरकुस का वर्णन अपने पुत्र के रूप में करता है। पापियास कहता है कि यूहन्ना मरकुस रोम में पतरस के साथ रहा और उसकी शिक्षाओं को सटीकता से लिखा।
>
> **डॉ. रॉबर्ट प्लम्मर**

आरम्भिक मसीही लेखकों में मरकुस को दूसरे सुसमाचार का लेखक बताने वाला पापियास था। पापियास दूसरी सदी की शुरूआत में रहा था और वह लगभग 130 ईस्वी में एशिया माइनर में एक बिशप था।

हमें पापियास के दृष्टिकोण की जानकारी विख्यात कलीसियाई इतिहासकार यूसेबियस से प्राप्त होती है, जिसने 325 ईस्वी के लगभग लिखा था। अपनी कृति कलीसियाई इतिहास की पुस्तक 3 अध्याय 39 भाग 15 में, यूसेबियस ने पापियास को उद्धृत किया :

> मरकुस जो पतरस का अनुवादक बन गया था, ने मसीह द्वारा कही या की गई बातों में से उसे जो कुछ याद था उसे सटीकता से लिखा, यद्यपि वह क्रमानुसार नहीं था। क्योंकि उसने न तो प्रभु को सुना था और न ही उसके पीछे चला था परन्तु बाद में, जैसे मैं ने कहा, वह पतरस के साथ रहा जिसने उसकी शिक्षा को अपने श्रोताओं की आवश्यकताओं के अनुसार ढ़ाला।

पापियास के अनुसार, मरकुस का सुसमाचार प्रेरित पतरस की शिक्षा पर अत्यधिक निर्भर था। मरकुस यीशु की सेवकाई का प्रत्यक्षदर्शी नहीं था परन्तु उसने वह लिखा जो पतरस ने यीशु से सुना और देखा था।

> मेरे विचार में हमारे पास जो सबसे आरम्भिक कलीसियाई परम्पराएँ हैं वे सुसमाचारों की रचना और सुसमाचारों के आरम्भिक प्रसार के समय के पर्याप्त निकट हैं कि लोगों को कुछ अच्छी जानकारी मिल सके। और इसका सर्वोत्तम उदाहरण वह है जिसकी जानकारी हमें पापियास से मिलती है, जो दूसरी सदी के आरम्भ में एशिया माइनर में हियरापुलिस का बिशप था। पापियास ने एक बड़ी पुस्तक लिखी जो दुःखद रूप से अब नहीं है और हमारे पास उसकी रचना के केवल छोटे-छोटे भाग हैं, परन्तु उनमें सुसमाचारों पर कुछ टिप्पणियाँ शामिल हैं। और ध्यान देने योग्य है कि पापियास हमें यह बताता है कि मरकुस ने अपना सुसमाचार पतरस के प्रचार के आधार पर लिखा। पापियास के अनुसार वह पतरस का अनुवादक था, जिसका शायद यह अर्थ है कि वह पतरस की अरामी भाषा का यूनानी या लैटिन में अनुवाद करता था। और पापियास हमें बताता है कि उसने अपना सुसमाचार पतरस के प्रचार की अपनी जानकारी के आधार पर लिखा। मेरे विचार में, यह सुसमाचारों के बारे में हमारे पास उपलब्ध सर्वाधिक विश्वसनीय और आरम्भिक परम्परा है, और यथार्थ में, मुझे इस पर सवाल उठाने का कोई कारण दिखाई नहीं देता।
>
> **डॉ. रिचर्ड बौखम**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

आरम्भिक कलीसिया के अन्य लेखकों ने भी पारम्परिक दृष्टिकोण की पुष्टि की कि इस सुसमाचार को मरकुस ने लिखा था। उदाहरण के लिए, ईस्वी 170 के आस-पास लिखित दूसरे सुसमाचार का एन्टी-मार्शियनाइट प्रोलोग प्रत्यक्षतः मरकुस के लेखक होने का दावा करता है। ईस्वी 177 के लगभग लिखनेवाले कलीसियाई पैतृक आइरेनियस ने भी इस विचार की पुष्टि की। और इसके अतिरिक्त, इस पुस्तक को शीर्षक देने वाले आरम्भिक यूनानी हस्तलेख इसे "मरकुस रचित सुसमाचार" कहते हैं।

दूसरे सुसमाचार के मरकुस द्वारा लिखित होने की पुष्टि करने वाले प्रमाण आरम्भिक कलीसिया में फैले हुए थे। यथार्थ में, हमारे पास प्राचीन कलीसिया से उसके लेखक होने के संबंध में किसी महत्वपूर्ण वाद-विवाद के होने का कोई अभिलेख नहीं है। यद्यपि हाल की सदियों में कुछ विद्वानों ने इस पारम्परिक विचार को अस्वीकार करने का प्रयास किया है, परन्तु उन्होंने मरकुस के लेखक होने की प्राचीन गवाही का खण्डन नहीं किया है, न ही वे सुसमाचार में कोई ऐसा संकेत देने में समर्थ हो पाए हैं जो मरकुस के लेखक होने को नकारता हो। इन कारणों से, आधुनिक मसीही निश्चय के साथ यह कह सकते हैं कि इस सुसमाचार को मरकुस ने लिखा है।

अब जबकि हमने पारम्परिक दृष्टिकोण को प्रमाणित कर दिया है कि मरकुस ने इस सुसमाचार को लिखा है, तो आइए हम उसके व्यक्तिगत इतिहास को देखते हैं ताकि हम उसके अभिलेख को बेहतर रूप से समझ सकें।

व्यक्तिगत इतिहास

प्रेरितों के काम **12:12** के अनुसार, मरकुस यरूशलेम में रहने वाली मरियम नामक एक महिला का पुत्र था। यरूशलेम में उसी के घर में कुछ मसीही पतरस के लिए प्रार्थना करने एकत्रित हुए थे, जब वह कारागृह में था। अतः, पतरस और दूसरे प्रेरितों के साथ मरकुस का संबंध कम से कम इतनी शीघ्र शुरू हो गया था।

मरकुस बरनबास का चचेरा भाई भी था, जैसा पौलुस ने कुलुस्सियों **4:10** में बताया है। उसने पहली मिशनरी यात्रा में पौलुस और बरनबास की भी सहायता की थी। परन्तु जैसा हम प्रेरितों के काम **13:13** में पढ़ते हैं, यात्रा के बीच में मरकुस ने उन्हें छोड़कर यरूशलेम लौट गया था।

इसके फलस्वरूप, पौलुस ने दूसरी मिशनरी यात्रा में मरकुस को शामिल होने की अनुमति देने से इनकार कर दिया। जैसा हम प्रेरितों के काम 15:36-41 में पढ़ते हैं, इस विषय पर पौलुस और बरनबास अलग हो गए। अतः, बरनबास कुप्रुस में सेवा के लिए मरकुस को अपने साथ ले गया, जबकि पौलुस ने यात्रा में अपने साथी के रूप में बरनबास की जगह सीलास को चुन लिया।

परन्तु कुलुस्सियों **4:10** के अनुसार, बाद में मरकुस ने पौलुस का भरोसा जीत लिया और पौलुस की गिरफ्तारियों में से एक के दौरान वह भी उसके साथ था।

बाद में, मरकुस ने रोम में सेवा के दौरान पतरस की भी सहायता की। यथार्थ में, पतरस के साथ उसका इतना घनिष्ट संबंध था कि पतरस ने 1 पतरस 5:13 में प्रेम से उसे मरकुस "मेरा पुत्र" कहा है। संभवतः इसी समय के दौरान पतरस ने मरकुस के सुसमाचार में लिखित यीशु की सांसारिक सेवकाई के अधिकाँश विवरणों को मरकुस को बताया होगा।

मरकुस या यूहन्ना मरकुस, जो उसका पूरा नाम है, बाइबल का एक आकर्षक पात्र है। वह केवल कुछ ही घटनाओं में संक्षिप्त रूप में सामने आता है। उसकी माता का नाम

> मरियम था। हम जानते हैं कि यरूशलेम में उसकी माता का एक घर था क्योंकि कलीसिया कभी-कभार उस घर में एकत्रित हुआ करती थी। वह बरनबास का चचेरा भाई था, जो प्रेरित पौलुस के मिशनरी सहयोगियों में से एक था। पौलुस और बरनबास की पहली मिशनरी यात्रा में वह भी उनके साथ गया था। कलीसियाई इतिहास हमें बताता है कि वह पतरस का भी एक निकट सहयोगी था। यथार्थ में, कलीसियाई इतिहास हमें बताता है कि मरकुस का सुसमाचार वास्तव में एक प्रकार से पतरस की यादों पर आधारित था। इसलिए कुछ लोग पूछते हैं, "तो यह मरकुस कौन है? वह एक प्रेरित नहीं था।" निश्चित रूप से सत्य है कि वह एक प्रेरित नहीं था, परन्तु उसकी योग्यताओं को देखिए; आश्चर्यजनक योग्यताएँ हैं। यह लगभग निश्चित है कि उसने शायद अपने बचपन में यीशु को देखा होगा और उसे जानता होगा। अतः उसने यीशु को अपनी आँखों से देखा था, निश्चिततः पुनरूत्थान का भी प्रत्यक्षदर्शी होगा। उसके शिक्षक कौन थे? उसके दो मुख्य शिक्षक अन्यजातियों के प्रेरित, पौलुस और बारह प्रेरितों के प्रतिनिधि पतरस थे। तो क्या वह यीशु मसीही के सुसमाचार को लिखने के योग्य है? पूर्णतः योग्य।
>
> **डॉ. मार्क स्ट्रॉस**

अब जबकि इस सुसमाचार के लेखक के रूप में हम मरकुस के बारे में बात कर चुके हैं, तो हमें मरकुस के मूल पाठकों की पहचान के बारे में अध्ययन करना चाहिए।

मूल पाठक

प्राचीन कलीसिया की गवाही और मरकुस के सुसमाचार के कई विवरण मरकुस के मूल पाठकों के रूप में इटली, मुख्यतः रोम के नगर की कलीसियाओं की ओर संकेत करते हैं।

हम आरम्भिक कलीसिया की गवाही और मरकुस के सुसमाचार के कुछ विवरणों को संक्षेप में देखते हुए इस विषय पर अध्ययन करेंगे कि मरकुस ने इटली और रोम की कलीसियाओं के लिए लिखा है। आइए पहले हम आरम्भिक कलीसिया की गवाही को देखें।

आरम्भिक कलीसिया की गवाही

तीन प्राचीन गवाह जिनका हमने पहले वर्णन किया है- पापियास (जिसने ईस्वी 130 के लगभग लिखा), एन्टी-मार्शियनाइट प्रोलोग (ईस्वी 170 के लगभग लिखित), और आइरेनियस (जिसने ईस्वी 177 के लगभग लिखा)- सबने यह जानकारी दी है कि मरकुस ने अपने सुसमाचार को इटली में लिखा और कुछ ने विशेष रूप से रोम नगर की पहचान की है। इसके अतिरिक्त, इनमें से किसी ने भी यह सुझाव नहीं दिया कि मरकुस ने अपने सुसमाचार को किसी अन्य नगर की कलीसिया में भेजा था। यह संकेत देता है कि मरकुस ने स्थानीय कलीसियाओं के लिए लिखा जहाँ वह रहता था। और इस निष्कर्ष को 1पतरस 5:13 से बल मिलता है जो बताता है कि पतरस के साथ सेवकाई के दिनों के दौरान मरकुस रोम में था।

निःसन्देह, सारे सुसमाचारों के समान, इतिहास प्रमाणित करता है कि परमेश्वर की इच्छा यह थी कि मरकुस के सुसमाचार का प्रयोग हर युग की सम्पूर्ण कलीसिया द्वारा किया जाए। परन्तु हम उसके सुसमाचार

की उसकी इच्छा के अनुसार बेहतर रूप से व्याख्या करने के लिए तब तैयार होते हैं जब हम यह समझते हैं कि उसने अपने समय में इटली के निवासियों, विशेषतः रोमी नागरिकों के साथ जो हो रहा था, उसके प्रति गहरी चिन्ता के कारण लिखा था।

आरम्भिक कलीसिया की गवाही के अतिरिक्त मरकुस के सुसमाचार के बहुत से विवरण भी यह सुझाव देते हैं कि उसने इटली की कलीसियाओं और विशेषतः रोम की कलीसियाओं के लिए लिखा था। हम मरकुस के सुसमाचार के चार विवरणों का वर्णन करेंगे जो इस दावे का समर्थन करते हैं कि उसने इटली और रोम की कलीसियाओं के लिए लिखा था।

सुसमाचार के विवरण

पहला, कई अवसरों पर मरकुस ने अपने पाठकों को फिलिस्तीनी रीतियों के बारे में समझाया। उदाहरण के लिए, मरकुस **7:3-4** में मरकुस ने फरीसियों द्वारा अपने हाथों को धोने की रीति के बारे में समझाया। इस प्रकार के स्पष्टीकरण यह सुझाव देते हैं कि मरकुस के पाठकों में एक बड़ी संख्या ऐसे अन्यजातियों की थी जो फिलिस्तीन से बाहर रहते थे।

एक और विवरण जो इटली और रोम के पाठकों के उपयुक्त है वह यह है कि मरकुस अरामी शब्दों को समझाता है। उदाहरण के लिए, मरकुस **3:17** में याकूब और यूहन्ना को दिए गए नामों के बारे में उसके स्पष्टीकरण को सुनें :

> जब्दी का पुत्र याकूब, और याकूब का भाई यूहन्ना, जिनका नाम उस ने बूअनरगिस, अर्थात् गर्जन के पुत्र रखा। (मरकुस **3:17**)

मरकुस ने ऐसे ही स्पष्टीकरण **5:41**, **7:34**, और **15:22**, **34** में दिए हैं। अरामी भाषी फिलिस्तीनियों को इन स्पष्टीकरणों की आवश्यकता नहीं होती और फिलिस्तीन से बाहर के बहुत से यहूदी भी अपने आराधनालयों से अरामी और इब्रानी भाषा से परिचित होते। अतः, यह विवरण सुझाव देता है कि मरकुस ने फिलिस्तीन से बाहर के अन्यजातियों के लिए लिखा था।

इटली और रोम के पाठकों की ओर अधिक स्पष्टता से संकेत करने वाला तीसरा विवरण यह है कि मरकुस ने किसी भी अन्य सुसमाचार के लेखक की अपेक्षा लैटिन शब्दों का प्रयोग अधिक किया है, जो यह संकेत देता है कि उसके पाठकों का एक बहुत बड़ा भाग लैटिन समझता था।

पहली सदी के दौरान, भूमध्यसागरीय संसार में लैटिन का विस्तृत प्रयोग नहीं होता था। यह मुख्यतः रोमी साम्राज्य के गृहनगर इटली तक सीमित थी। अतः, यह महत्वपूर्ण है कि मरकुस ने कम से कम **15** बार लैटिन शब्दों का प्रयोग किया है। उदाहरण के लिए, मरकुस **12:42** में, उसने लैटिन शब्द लेप्टा का प्रयोग किया है, जो एक छोटे ताँबे के सिक्के को बताता है। यद्यपि उसने वह शब्द यूनानी अक्षरों में लिखा है परन्तु वह शब्द लैटिन है और लैटिन न जानने वाले लोगों द्वारा उसे समझे जाने की संभावना नहीं थी।

मरकुस द्वारा इटली और विशेषतः रोम की कलीसियाओं के लिए लिखने की संभावना को दिखाने वाला एक चौथा विवरण यह है कि मरकुस ने रूफुस नामक व्यक्ति का वर्णन किया है।

मरकुस **15:21** में, हमें बताया गया है कि गोलगोता की ओर यीशु के क्रूस को उठाकर ले जाने वाला व्यक्ति रूफुस और सिकन्दर का पिता था- ऐसे दो व्यक्ति जिनकी मरकुस के सुसमाचार में कोई भूमिका नहीं

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

है। तो मरकुस ने उनका वर्णन क्यों किया? सर्वोत्तम स्पष्टीकरणों में से एक यह है कि वे मरकुस के पाठकों से परिचित थे, या उनमें से थे। और यथार्थ में, रोमियों **16:13** में रोमी कलीसिया के सदस्य के रूप में रूफुस नामक एक व्यक्ति का वर्णन किया गया है। यह मानते हुए कि यह मरकुस द्वारा वर्णित रूफुस ही है, इसका आशय यह है कि मरकुस ने रोम की कलीसिया के लिए लिखा था।

इनमें से कोई भी विवरण व्यक्तिगत रूप से यह साबित नहीं करता कि रोम मरकुस के सुसमाचार का गंतव्य था। परन्तु उनका सामूहिक प्रभाव प्राचीन कलीसिया की दृढ़ गवाही की पुष्टि करता है। और जैसा हम इस अध्याय में बाद में देखेंगे, रोमी पाठकों को ध्यान में रखते हुए इस सुसमाचार को पढ़ने से हमें मरकुस के कुछ विशेष महत्वों को समझने और उन्हें आधुनिक कलीसिया में हमारे स्वयं के जीवनों में लागू करने में सहायता मिल सकती है।

इस सुसमाचार के लेखक और मूल पाठकों को ध्यान में रखते हुए, हम मरकुस के सुसमाचार की पृष्ठभूमि के तीसरे पहलू को जाँचने के लिए तैयार हैं: इसके लेखन का अवसर या परिस्थितियाँ।

अवसर

हम मरकुस के सुसमाचार को लिखने के अवसर के दो आयामों का अध्ययन करेंगे। पहले, हम मरकुस द्वारा लिखने की तिथि या समय पर विचार करेंगे। और फिर, हम मरकुस द्वारा लिखने के उद्देश्य का अध्ययन करेंगे। आइए हम पहले मरकुस द्वारा सुसमाचार को लिखने की तिथि को देखें।

तिथि

मरकुस के सुसमाचार की लेखन तिथि का निर्धारण पूर्ण निश्चितता के साथ नहीं किया जा सकता। परन्तु विशाल रूप में, प्रमाण पहली सदी के मध्य से **60** के दशक के अन्त के समय की ओर संकेत करते प्रतीत होते हैं।

आइरेनियस और मरकुस का एन्टी-मार्शियनाइट प्रोलोग जैसे प्राचीन गवाह दावा करते हैं कि मरकुस ने अपने सुसमाचार को पतरस की मृत्यु के बाद लिखा था। इसकी अत्यधिक संभावना है कि ईस्वी **64** में रोम में लगी आग के बाद रोमी सम्राट नीरो द्वारा कलीसिया पर किए गए अत्याचारों के दौरान पतरस शहीद हो गया था। पापियास का आशय यह हो सकता है कि मरकुस ने अपने कार्य की शुरूआत तब की जब पतरस जीवित था, परन्तु वह इस संभावना से इनकार नहीं करता कि मरकुस द्वारा कार्य को समाप्त करने से पहले पतरस मर चुका था। अतः, यह स्वीकार करना उपयुक्त प्रतीत होता है कि मरकुस द्वारा अपने सुसमाचार को पूरा करने की सबसे आरम्भिक तिथि ईस्वी **64** में पतरस की मृत्यु के आस-पास रही होगी।

मरकुस द्वारा लिखने की सबसे अन्तिम तिथि को निर्धारित करना कठिन है। जैसे पिछले एक अध्याय में हमने देखा, बहुत से विद्वानों का मानना है कि मरकुस सबसे पहला लिखित सुसमाचार था और मत्ती एवं लूका दोनों ने अपने सुसमाचारों को लिखते समय संदर्भ के रूप में मरकुस का प्रयोग किया था। चूंकि इन तीनों में से कोई भी सुसमाचार ईस्वी **70** में हुए यरूशलेम और उसके मन्दिर के विनाश का वर्णन नहीं करता है, इसलिए बहुत से विद्वानों का यह निष्कर्ष है कि मत्ती, मरकुस और लूका, तीनों उस समय से पहले लिखे गए थे। और यदि मत्ती और लूका ने अपनी रचनाओं को पूरा करने से पहले मरकुस का उपयोग किया है तो यह कहना सुरक्षित है कि मरकुस ईस्वी **70** से भी पहले लिखा गया था- निश्चित रूप से ईस्वी **69** तक या संभवतः

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

ईस्वी **67** तक, जो मत्ती और लूका को अपनी स्वयं की रचनाओं को पूरा करने से पहले मरकुस के सुसमाचार से परिचित होने के लिए अधिक समय उपलब्ध करवाएगा।

मरकुस के सुसमाचार की तिथि को ध्यान में रखते हुए, आइए हम उसके लिखने के उद्देश्य पर विचार करें।

उद्देश्य

एक अर्थ में, मरकुस और अन्य सारे सुसमाचारों का एक ही उद्देश्य थाः यीशु के जीवन और शिक्षाओं के सच्चे ऐतिहासिक अभिलेख को सुरक्षित रखना। ईस्वी **50** के बाद से यीशु के जीवन, मृत्यु, और पुनरूत्थान के गवाहों और प्रेरितों की मृत्यु होती जा रही थी। इसलिए, उनकी गवाही को सुरक्षित रखने की आवश्यकता बढ़ती जा रही थी। जैसे यूसेबियस और अन्य आरम्भिक कलीसियाई लेखकों ने बताया, मरकुस का आँशिक उद्देश्य यीशु की सेवकाई के पतरस के अभिलेख को सुरक्षित रखना था।

परन्तु इस अभिलेख को सुरक्षित रखना ही मरकुस का एकमात्र उद्देश्य नहीं था। प्रत्येक सुसमाचार लेखक के समान, मरकुस केवल यह नहीं चाहता था कि उसके पाठक यीशु के बारे में जानें। वह यह भी चाहता था कि वे यीशु के जीवन से बातों को सीखें जिन्हें वे अपने स्वयं के जीवनों में लागू कर सकें। परन्तु उनके जीवन कैसे थे?

> रोम में ईस्वी **60** का दशक मसीहियों के लिए वास्तव में एक कठिन समय था। आपको याद करना होगा कि उस समय तक रोमी कानून में, यदि आप एक यहूदी थे तो आप एक मान्यता प्राप्त धर्म के अंग थे; इसे वैध धर्म, एक स्वीकृत धर्म माना जाता था। और इसलिए यहूदी मसीहियों पर अधिक अत्याचार नहीं हो रहे थे क्योंकि रोमी सोचते थे, "वे तो यहूदी धर्म के ही भाग हैं।" परन्तु क्या होता है जब रोमी अधिकारियों को यह अहसास होने लगता है, "अरे! इस नए धर्म में तो गैर-यहूदी, अन्यजाति सब शामिल हैं और यह यहूदी धर्म से बहुत अलग है?" अचानक ही यह एक सुरक्षित या स्वीकृत धर्म नहीं रह जाता है और रोमी अधिकारी उसके बारे में चिन्तित हो सकते हैं। अब, ईस्वी **60** के दशक के आरम्भ में रोम में ठीक यही होता है या पहचाना जाता है। वर्ष **59** में नीरो थोड़ा पागल हो जाता है, उसके राज्य के पहले पाँच वर्ष कुछ अच्छे थे परन्तु उस समय से ईस्वी **68** में उसकी मृत्यु तक, वह अधिक से अधिक अप्रत्याशित होता जाता है। फिर ईस्वी **60** के लगभग पौलुस रोम में पहुँचता है और वह मसीह के लिए मरने और यह दिखाने का इच्छुक है कि उसका नया धर्म सम्राट नीरो सहित सब लोगों के लिए है। और यह संभव है कि जब नीरो का इससे सामना होता है तो उसे यह अहसास होने लगता है कि यह एक ऐसा धर्म है जो मुझे पसन्द नहीं है। अधिकार मेरे पास है और ये मसीही घोषणा कर रहे हैं कि "यीशु प्रभु है।" अतः, जब **18** जुलाई, सन् **64** में रोम में आग लगती है और उसका दोष नीरो पर लगाया जाता है, तो नीरो वह दोष इस नए समूह पर लगा देता है जो मसीही कहलाते हैं, और उसके बारे में हम जो सुनते हैं वह दुःखद है।
>
> **डॉ. पीटर वॉकर**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

जिन वर्षों के दौरान संभवतः मरकुस लिख रहा था, उस समय रोम की कलीसिया रोमी सम्राट नीरो के अधीन अत्याचार सह रही थी। नीरो ने ईस्वी **54** से **68** तक राज्य किया। वह ईस्वी **64** में रोम में आग लगाने का दोष मसीहियों पर लगाने और उन्हें भयानक तरीकों से दण्ड देने के लिए कुख्यात है।

> नीरो के शासन के अधीन, रोम ने कलीसिया पर घोर अत्याचार किया। आरम्भ में, रोम का गठन एक गणतंत्र के रूप में किया गया था। बाद में, जूलियस कैसर की हत्या के बाद, अगस्तुस ने सेना की कमान संभालकर रोम नगर पर अधिकार कर लिया और सीनेट को भंग कर दिया। अतः, रोमी गणराज्य रोमी साम्राज्य बन गया और अगस्तुस उसका पहला सम्राट बना। यहीं से रोमी क्रूरता के इतिहास की शुरूआत होती है। यथार्थ में, मसीहियों पर अत्याचार के मामले में नीरो सबसे बुरा नहीं था। अन्य सम्राटों ने मसीहियत पर और भी घातक हमले किए और ऐतिहासिक अभिलेखों के अनुसार बहुत से मसीहियों को क्रूस पर कीलों से ठोककर मारा गया या जीवित जला दिया गया। आरम्भिक कलीसिया में बहुत से शहीद थे जिन्होंने अपनी मृत्यु के द्वारा परमेश्वर की करूणा और धार्मिकता की गवाही दी।
>
> **डॉ. स्टीफन चान**

इस अवधि के दौरान रोम और उसके आस-पास मसीहियों के लिए जीवन कई प्रकार से कठिन था। और जैसा हम देखेंगे, मरकुस ने उनकी परिस्थितियों में सेवा के लिए अपने सुसमाचार को तैयार किया। मरकुस के लिखने के उद्देश्य का वर्णन करने के बहुत से तरीके हैं परन्तु इस अध्याय में हम इस विचार पर ध्यान केन्द्रित करेंगे कि मरकुस ने अपने सुसमाचार को रोम के अत्याचार से पीड़ित मसीहियों को बल देने के लिए लिखा।

मरकुस के सुसमाचार ने यह स्पष्ट किया कि रोमी मसीहियों ने जिन कठिनाईयों और परीक्षाओं का सामना किया, यीशु पहले ही उनका सामना कर चुका था। उसे रोमी न्यायालय में अन्यायपूर्ण तरीके से दोषी ठहराया गया। उसे रोमी सैनिकों द्वारा पीटा गया। और उसे एक रोमी क्रूस पर लटकाया गया। परन्तु अपने कष्टों के बीच में यीशु विजयी रहा। और मरकुस अपने पाठकों को भरोसा दिलाना चाहता था कि यदि वे विश्वासयोग्यता से यीशु के पीछे चलते हैं तो वे भी विजयी होंगे। हाँ, उन्हें कष्ट सहना होगा। परन्तु उनका कष्ट उनकी महिमा का मार्ग होगा, जैसा यीशु के लिए था।

अब जबकि हम मरकुस के सुसमाचार की पृष्ठभूमि को देख चुके हैं, तो आइए हम उसकी संरचना और विषय-सूची को देखते हैं।

संरचना एवं विषय-सूची

एक बड़े स्तर पर, मरकुस का सुसमाचार पाँच मुख्य भागों में विभाजित है। पहला, मरकुस अपने सुसमाचार की शुरूआत **1:1-13** में यीशु की मसीहा के रूप में संक्षिप्त घोषणा के साथ करता है। दूसरा, **1:14-8:26** में एक बड़ा भाग मसीहा की सामर्थ का वर्णन करता है। तीसरा, **8:27-30** में, एक छोटा परन्तु प्रमुख

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

केन्द्रीय भाग प्रेरितों द्वारा मसीहा की पुष्टि को प्रस्तुत करता है। चौथा, एक और बड़ा भाग **8:31-15:47** में मसीहा के कष्ट के बारे में बताता है। और पाँचवाँ, एक लघु उपसंहार है जो **16:1-8** में मसीहा की विजय के बारे में बताता है। हम मसीहा की घोषणा से शुरू करेंगे और मरकुस के इनमें से प्रत्येक भाग को कुछ गहराई तक देखेंगे।

मसीहा की घोषणा

सुनें मरकुस **1:1** में सुसमाचार की शुरूआत कैसे होती है :

> परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार का आरम्भ। (मरकुस 1:1)

जब मरकुस ने यीशु को "मसीह" के रूप में संबोधित किया तो उसने इब्रानी शब्द मसीहा के यूनानी अनुवाद का प्रयोग किया। इसी प्रकार, परमेश्वर का पुत्र शब्द एक और संकेत था कि यीशु परमेश्वर का मसीहा है।

पुराने नियम और तत्कालीन यहूदी धर्मविज्ञान में, मसीहा को राजा दाऊद का वंशज होना था जो शाही सिंहासन को इस्राएल को वापस लौटाएगा और देश को पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य की ओर लाएगा।

इस शुरूआती घोषणा के बाद मरकुस 1:2-11 में यूहन्ना बपतिस्मादाता के द्वारा यीशु के बपतिस्मा का संक्षिप्त अभिलेख दिया गया है। यीशु के बपतिस्मा के अन्त में, पवित्र आत्मा यीशु पर उतरा, और स्वर्ग से पिता परमेश्वर की आवाज यह घोषणा करते हुए सुनाई दी कि यीशु उसका प्रिय पुत्र था। इस प्रकार, आत्मा और पिता दोनों ने यह प्रमाणित किया कि यीशु वास्तव में बहु-प्रतीक्षित मसीहा था।

> यह सोचना बहुत ही रूचिकर है कि यीशु के समय के यहूदी मसीहा के आगमन के संबंध में क्या सोचते थे। और वास्तव में, उनके बीच में बहुत सारे विविध प्रकार के विचार थे। मृत सागर चर्मपत्रों से हमारे पास कुछ अभिलेख हैं जो यह दिखाते हैं कि कुछ लोगों का यह विश्वास था कि दो मसीही आएँगे, एक याजकीय मसीही और राजकीय मसीहा। परन्तु मुख्यधारा की अपेक्षा यह थी कि मसीहा दाऊद का पुत्र होगा और वह राजनैतिक शान्ति स्थापित करेगा और रोमियों को खदेड़ देगा। मेरे विचार से धार्मिक केन्द्र का यह मानना था कि यदि इस्राएल व्यवस्था का पालन करेगा तो राज्य आ जाएगा। वे यीशु को इस संबंध में वास्तव में एक खतरा मानते थे क्योंकि यीशु व्यवस्था को मानने की अपेक्षा उसे तोड़ने को बढ़ावा देता लगता था, कम से कम उनकी दृष्टि में। उसके पास वह राजनैतिक बल नहीं था जिसकी उन्होंने अपेक्षा की थी और फिर व्यवस्था के संबंध में भी उसने वह नहीं किया जिसकी उन्हें अपेक्षा थी, और इसलिए मेरे विचार में वे उसके कारण दुविधा में थे। वास्तव में, मेरे विचार में अन्ततः वे यीशु को व्यवस्थाविवरण **13** के अर्थ में एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखते थे जो चिन्ह, चमत्कार और आश्चर्यकर्म तो करता था परन्तु एक झूठा भविष्यवक्ता था और उसे मार डाला जाना चाहिए था।

डॉ. थॉमस श्रेइनर

परन्तु यीशु उस प्रकार का मसीहा नहीं था जैसी बहुत से लोगों ने अपेक्षा की थी। सामान्यतः, पहली सदी के यहूदियों का सोचना था कि मसीहा इस्राएल में आएगा और शासन को अपने हाथ में लेगा। परन्तु मरकुस 1:12-13 में, हम देखते हैं कि यीशु के बपतिस्मा के तुरन्त बाद पवित्र आत्मा ने उसे शैतान द्वारा परीक्षा के लिए मरूभूमि में भेज दिया। अन्त में वह विजयी हुआ। परन्तु परमेश्वर की योजना के अनुसार विजय का उसका मार्ग कठिनाई से भरा लम्बा रास्ता था।

यीशु की मसीहा के रूप में घोषणा के बाद, मरकुस 1:14-8:26 में मरकुस ने मसीहा की सामर्थ का वर्णन किया।

मसीहा की सामर्थ

मरकुस की कहानी के इस भाग में यीशु मसीहा के रूप में अपनी सामर्थ और अधिकार का प्रदर्शन करना शुरू करते हैं। बहुत बड़ी भीड़ इस सेवकाई को देखने और उससे लाभ उठाने के लिए एकत्रित होती थी परन्तु उन्होंने यह नहीं पहचाना कि यीशु की सामर्थ यह साबित करती थी कि वह मसीह है। यथार्थ में, इस सम्पूर्ण भाग में कोई भी उसे मसीह के रूप में संबोधित नहीं करता है। यहाँ तक कि यीशु भी अपनी पहचान के बारे में चुप रहा और उसने दूसरों को भी चुप रहने के लिए प्रोत्साहित किया।

निःसन्देह, मरकुस के रोमी श्रोताओं में पहले पाठक मसीही थे, इसलिए वे पहले से ही जानते थे कि यीशु मसीहा था। परन्तु कहानी के इस भाग में मरकुस की रणनीति ने उन्हें यीशु के चारों ओर की भीड़ के तनाव को महसूस करने की अनुमति दी, जो अवश्य ही यह सोचती होगी कि वास्तव में यह सामर्थी व्यक्ति कौन था और वह क्या करने आया था।

दुर्भाग्यवश, आलोचनात्मक विद्वानों ने यीशु की चुप्पी को प्रायः इस संकेत के रूप में लिया है कि यीशु को अपनी आरम्भिक सेवकाई के दौरान अपनी मसीहारुपी भूमिका की जानकारी नहीं थी। परन्तु जैसा हमने मरकुस 1:11 में देखा, स्वयं परमेश्वर ने यीशु के बपतिस्मा के समय मसीहा के रूप में उसकी भूमिका की घोषणा की। इस प्रकाश में, यीशु की चुप्पी को रणनीति के रूप में समझना कहीं बेहतर है। यीशु का एक विशेष लक्ष्य था और वह जानता था कि जितने अधिक लोग उसके पास आएँगे उस लक्ष्य को पूरा करने में उतनी ही बाधा आएगी।

मसीहा की सामर्थ का वर्णन करने वाले मरकुस के लेख को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है। पहला, मरकुस ने एक परिचय उपलब्ध करवाया जिसने सम्पूर्ण कहानी के स्वर को निर्धारित किया। दूसरा, उसने कफरनहूम के निकट यीशु की स्थानीय सेवकाई पर ध्यान केन्द्रित किया। तीसरा, उसने बताया कि यीशु की सेवकाई गलील के शेष क्षेत्र में फैल गई। और चौथा, उसने जानकारी दी कि यीशु अन्ततः गलील के पार मुख्यतः अन्यजातीय क्षेत्रों में भी गया। हम मरकुस 1:14-15 के परिचय से आरम्भ करते हुए इन चारों भागों को देखेंगे।

परिचय

सुनें मरकुस 1:15 में मरकुस ने यीशु के प्रचार को संक्षेप में किस प्रकार बताया है :

> "(यीशु ने) कहा, समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।" (मरकुस 1:15)

मरकुस ने संकेत दिया कि गलील में यीशु का मुख्य उद्देश्य इस सुसमाचार का प्रचार करना था कि परमेश्वर का राज्य निकट है और उसकी आशीषें उन सब लोगों के लिए हैं जो मन फिराते और विश्वास करते हैं।

मसीहा की सामर्थ के अभिलेख के दौरान मरकुस ने गलील और उसके आस-पास के क्षेत्र में यीशु की सेवकाई पर ध्यान केन्द्रित किया, जो कफरनहूम नगर के निकट आरम्भ हुई और वहाँ से बाहर की ओर फैल गई। मरकुस के सुसमाचार की अन्य सुसमाचारों से तुलना के द्वारा यह प्रतीत होता है कि मरकुस ने उन समयों को हटा दिया है जब यीशु ने दूसरे स्थानों पर सेवकाई की थी। यह कार्य संकेत देता है कि मरकुस का लक्ष्य यीशु की सारी यात्राओं का विस्तृत विवरण उपलब्ध करवाने की अपेक्षा गलील के क्षेत्र में यीशु की गतिविधियों और रणनीतियों की जानकारी देना था।

परिचय के बाद मरकुस 1:16-3:6 में मरकुस गलील के क्षेत्र में कफरनहूम के निकट यीशु की सेवकाई का वर्णन करता है।

कफरनहूम के निकट

मरकुस ने इस जानकारी के साथ आरम्भ किया कि यीशु ने मरकुस 1:16-20 में अपने पहले चेलों को बुलाया। इस भाग में, हम देखते हैं कि लोग कठोर आज्ञापालन के द्वारा यीशु को प्रत्युत्तर देते हैं। यीशु ने उन्हें अपने पीछे हो लेने के लिए कहा, इसलिए उन्होंने अपना काम छोड़ दिया और उसके चेले बन गए।

फिर, यीशु ने मरकुस 1:21-34 में कफरनहूम में सिखाने और आश्चर्यकर्मों को करने के द्वारा सुसमाचार का प्रचार किया।

इस समय के दौरान यीशु की ख्याति पूरे गलील में फैलने लगी जो उसकी पूरी सेवकाई के दौरान फैलती रही। बढ़ती ख्याति के कारण भीड़ यीशु के चारों ओर एकत्रित होने लगी, जो प्रायः सुसमाचार के प्रचार और प्रदर्शन की उसकी क्षमता में बाधा पहुँचाती थी। अतः, वह दूसरों को निर्देश देने लगा कि उसे मसीहा के रूप में प्रस्तुत न करें।

फिर यीशु ने कफरनहूम छोड़ दिया और आस-पास के गाँवों में सिखाने और चमत्कार करने लगा, जैसा हम मरकुस 1:35-45 में देखते हैं। यीशु आस-पास के गाँवों में इसलिए गया ताकि अपनी शिक्षा और चमत्कारों के द्वारा अपने सुसमाचार का प्रसार करे। परन्तु ऐसा उसने कफरनहूम की भीड़ से बचने के लिए भी किया जो उसे स्वतंत्रता से सेवकाई करने में बाधा पहुँचा रही थी। जैसा उसने पहले किया था, उसने अपने मिलने वालों को कहा कि वे उसके बारे में सूचनाओं को प्रसारित न करें।

फिर, मरकुस ने जानकारी दी कि यीशु कफरनहूम में लौटा जहाँ यहूदी अगुवों से उसका टकराव हुआ, जैसा हम मरकुस 2:1-3:6 में पढ़ते हैं।

मरकुस के सुसमाचार का यह भाग पाप क्षमा करने के यीशु के अधिकार, पापियों की सेवकाई के लिए उसके स्पष्टीकरण, और सब्त के बारे में उसकी शिक्षा जैसी बातों के बारे में बताता है। परन्तु यह उसकी बढ़ती हुई ख्याति के एक और परिणाम का भी परिचय देता है : यीशु का विरोध करने वालों की संख्या बढ़ने लगी और वे अधिक दृढ़ता से उसका विरोध करने लगे। यथार्थ में, यह भाग यीशु की मृत्यु की परछाई दिखाने के साथ समाप्त होता है। मरकुस 3:6 में, मरकुस ने बताया कि यीशु के विरोधी इतने क्रोधित थे कि उनमें से बहुत से लोग उसे मार डालने की योजना बनाने लगे।

> यीशु को उसके प्रचार और चमत्कारों के कारण स्वीकार नहीं किया गया था। जब हम नया नियम पढ़ते हैं तो हम सोचते हैं कि लोग उसे स्वीकार क्यों नहीं करते थे? वे

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उसकी सामर्थ को क्यों नहीं देखते थे? वे उसकी शिक्षा को क्यों नहीं सुनते थे? परन्तु मसीह की शिक्षा की कई बातों के कारण लोगों ने उसे अस्वीकार कर दिया। एक बात यह थी कि उसकी विषय-सूची वह नहीं थी जैसी वे चाहते थे। उन्हें इस पृथ्वी पर एक साम्राज्य की आशा थी। वह एक ऐसे राज्य के बारे में बता रहा था जो लोगों के दिलों में आएगा और लोगों के जीवनों को बदल देगा, वह लोगों के दिलों में परमेश्वर के शासन और राज्य की बात कर रहा था। एक कारण यह भी था कि उसकी शिक्षा दिल पर चोट करती थी। और निःसन्देह उसके चमत्कारों से भी गहरी घृणा की जाती थी क्योंकि मसीह की शिक्षा से असहमति जताने वाले उसके शत्रु यह जानते थे कि उसके चमत्कार उसकी बातों को प्रमाणित करते हैं। पाप में पतित मन स्वाभाविक रूप से या आसानी से परमेश्वर की शिक्षा को स्वीकार नहीं करता है और यीशु की सेवकाई उसका चमकता हुआ उदाहरण है क्योंकि यहाँ परमेश्वर मनुष्यों के बीच में है, फिर भी मनुष्य उसे अस्वीकार करते हैं।

डॉ. जेफ लौमैन

हम प्रायः अपने उद्देश्यों के साथ परमेश्वर के पास आते हैं। हमारी अपनी अपेक्षाएँ हैं कि वह कैसा होना चाहिए, और उसे कैसे कार्य करना चाहिए। और जब वह हमारी कार्यसूचियों, हमारी अपेक्षाओं के विपरीत करता है तो प्रायः उसके प्रति हमारे अन्दर अधिक सहनशीलता नहीं होती है। और इसलिए, लोग यीशु से घृणा करेंगे जब वह एक ऐसे राज्य का प्रचार करते हुए आता है जो उनके आदर्श राज्य से मेल नहीं खाता। वह एक ऐसे मसीहा के रूप में आता है जो पहले से उनके मन में बैठी हुई अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं है कि मसीहा कैसा होना चाहिए। और इसलिए, वह उनकी अपेक्षाओं को तोड़ता है। और हमें यह अच्छा नहीं लगता। कई बार लोग इसलिए यीशु से घृणा करते थे क्योंकि वह धार्मिक अगुवों से काफी भिन्न योजना के साथ आया था। वह एक ऐसे राज्य का प्रचार करता हुआ आया जो उनकी धार्मिक भूमिकाओं की सामर्थ, प्रमुखता, अधिकार, और प्रतिष्ठा को दूर करने वाला था और वे उससे कोई संबंध नहीं रखना चाहते थे। अतः जब भी हम अपनी स्वयं के उद्देश्यों के साथ परमेश्वर के पास आते हैं तो हम नम्र दिलों, सिखाने योग्य दिलों के साथ उसके पास आने और जो कुछ वह हमारे मार्ग में लाता है उसके लिए उस पर भरोसा करने की बजाए हम स्वयं को परमेश्वर के विरोध में खड़ा करते हैं।

डॉ. के. एरिक थोनेस

अब जबकि हम कफरनहूम के निकट यीशु के कार्य का सर्वेक्षण कर चुके हैं तो आइए हम मरकुस 3:7-6:13 में गलील के पूरे क्षेत्र में उसकी विस्तृत सेवकाई को देखते हैं।

गलील का क्षेत्र

इस चरण में, यीशु ने कफरनहूम से आगे आस-पास के शेष क्षेत्र में बढ़ते हुए नए क्षेत्रों में परमेश्वर के राज्य की निकटता का प्रचार और प्रदर्शन किया। इन क्षेत्रों में मन फिराव और विश्वास का प्रचार करते हुए वह निरन्तर भीड़ को आकर्षित करता और दृढ़ विरोध को प्रेरित करता रहा।

इस भाग की शुरूआत मरकुस 3:7-12 में यीशु के भीड़ से दूर जाने के साथ होती है।यह अनुच्छेद इस बात पर बल देने के द्वारा सम्पूर्ण भाग के स्वर का निर्धारण करता है कि यीशु द्वारा अपनी ख्याति को कम करने के प्रयासों के बावजूद उसकी ख्याति फैलती जा रही थी। और इसके फलस्वरूप उसके चारों ओर एकत्रित होने वाली भीड़ ने उसके लिए सेवकाई करना कठिन बना दिया था। ऐसा प्रतीत होता है कि यीशु द्वारा अपनी सेवकाई को गलील के दूसरे क्षेत्रों में फैलाने का एक कारण यह कठिनाई थी।

इस कहानी का अगला भाग यीशु द्वारा अपने अनुयायियों में से बारह लोगों को अपने विशेष चेलों के रूप में नियुक्त करने के बारे में बताता है, जिसे हम मरकुस 3:13-19 में पढ़ते हैं।यीशु ने सुसमाचार के प्रचार और चमत्कारों में सहायता के लिए इन बारह चेलों को चुना। परन्तु मरकुस ने अपने पाठकों को यह भी याद दिलाया कि इनमें से एक चेला अन्त में यीशु को पकड़वाएगा। यीशु का विरोध केवल शत्रुओं की ओर से ही नहीं परन्तु उसके निकटतम अनुयायियों की ओर से भी आएगा।

इसके बाद, जब हम मरकुस 3:20-25 पढ़ते हैं तो मरकुस व्यवस्थापकों और अपने स्वयं के परिवार की ओर से यीशु के विरोध के बारे में बताता है। यह लेख प्रदर्शित करता है कि जब यीशु ने आश्चर्यजनक सामर्थ के साथ राज्य के सुसमाचार का प्रचार किया तो उसे हर तरफ से विरोध का सामना करना पड़ा। उसे मसीहा के रूप में स्वीकार करने की बजाय, व्यवस्थापकों का मानना था कि उसमें दुष्टात्मा है और उसके अपने परिवार वाले कहते थे कि वह पागल हो गया है।

इसके बाद, मरकुस 4:1-34 में यीशु ने परमेश्वर के राज्य से संबंधित दृष्टान्तों के द्वारा सुसमाचार का प्रचार किया। यीशु सामान्यतः अविश्वासियों से घिरे होने पर दृष्टान्तों में सिखाया करता था। ऐसा वह विश्वास करने वालों पर परमेश्वर के राज्य को प्रकट करने और विश्वास न करने वालों से उसे छिपाने के लिए करता था। जैसे मरकुस 4:11-12 में उसने अपने चेलों से कहा :

> उसने उनसे कहा, "तुम को तो परमेश्वर के राज्य के भेद की समझ दी गई है, परन्तु बाहर वालों के लिए सब बातें दृष्टान्तों में होती हैं। इसलिए कि वे देखते हुए देखें और उन्हें सुझाई न पड़े और सुनते हुए सुनें भी और न समझें; ऐसा न हो कि वे फिरें, और क्षमा किए जाएँ।" (मरकुस 4:11-12)

यह दुःखद बात है कि कई बार यीशु के दृष्टान्त उसके चेलों को भी दुविधा में डाल देते थे। परन्तु जब ऐसा होता तो यीशु एकान्त में उसके अर्थ को उन्हें समझाते थे और यह सुनिश्चित करते थे कि वे समझ गए हैं।

मरकुस की कहानी के इस भाग में दृष्टान्तों का मुख्य बिन्दू यह है कि परमेश्वर सुसमाचार के प्रसार द्वारा धीमी उन्नति की एक लम्बी प्रक्रिया के बाद ही अपने राज्य की पूर्णता को लाएगा। यीशु परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी पर ला रहे थे। परन्तु वह उसे एक लम्बे तरीके से ला रहे थे जिसमें प्रायः उनके अनुयायियों को यीशु के समान ही कष्ट और विरोध का सामना करने की जरूरत थी।

यीशु के दृष्टान्तों के मरकुस के वर्णन के बाद मरकुस 4:35-5:43 में सामर्थ के कई प्रदर्शन हैं। यहाँ, मरकुस बताता है कि यीशु ने मौसम को नियंत्रित किया, दुष्टात्माओं को निकाला, बीमारों को चंगा किया, और मृतकों को जीवित किया। इनमें से प्रत्येक कहानी में लोग खतरे के सामने भयभीत थे। परन्तु जब यीशु ने उन्हें

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

आश्चर्यजनक रूप से छुटकारा दिया तो उनका भय वास्तव में बढ़ गया क्योंकि उन्हें यह समझ नहीं आया कि यह सामर्थी व्यक्ति वास्तव में कौन था।

> यीशु के नाटकीय कार्य करने पर, आश्चर्यजनक चमत्कार करने पर सुसमाचार में यीशु के चेले कई बार भय व्यक्त करते हैं। जब परमेश्वर कार्य करता है तो वे भयभीत होते हैं। उदाहरण के लिए मरकुस **4** में, चेले समुद्र में एक बड़े तूफान के बीच में हैं। लहरें नाव से टकरा रही हैं और ऐसा लगता है कि नाव डूबने वाली है और यीशु नाव की गद्दी पर सो रहे हैं। अतः वे इस आशा के साथ यीशु को जगाते हैं कि वह नाव को निकालने में उनकी सहायता करेगा, और वे कहते हैं, "हे स्वामी, क्या तुझे कोई चिन्ता नहीं कि हम डूब रहे हैं?" यीशु उठते हैं और हवा तथा लहरों को शान्त होने की आज्ञा देते हैं। और वे बच जाते हैं। वे तूफान से अत्यधिक डर गए थे और अब मरकुस हमें बताता है कि उनमें और अधिक भय समा जाता है। वे भयभीत क्यों हैं? अब तूफान नहीं है; लहरें भी शान्त हो गई हैं। वे इसलिए भयभीत हैं क्योंकि वे जानते हैं कि परमेश्वर ही हवा और लहरों को शान्त कर सकता है, जिसने हवा और लहरों को बनाया है। और उन्हें यह महसूस हुआ कि वे नाव में साक्षात् परमेश्वर के साथ हैं जिसने अभी हवा और लहरों को शान्त किया है। यह उनमें भय उत्पन्न्ा कर देता है क्योंकि मुझे नहीं लगता कि वे अभी तक यह जानते हैं कि यह किस प्रकार का परमेश्वर है। वे एक प्रकार से असमंजस में हैं और वे यीशु के चरित्र को नहीं जानते हैं।
>
> **डॉ. फ्रैंक थिलमैन**

सामर्थ के इन प्रदर्शनों के बाद, मरकुस 6:1-6 में मरकुस ने गृहनगर नासरत में हुए यीशु के विरोध के बारे में लिखा। यह कहानी पुनः इस बात पर बल देती है कि सेवकाई के इस चरण में बहुत से लोगों ने यीशु का घोर विरोध किया। उसके सुसमाचार के सामर्थ के साथ फैलने और उसके पीछे चलने वाली भीड़ के बढ़ने पर भी उसके गृहनगर के लोग उसे और उसके सुसमाचार को स्वीकार नहीं करते हैं।

अन्ततः, गलील के क्षेत्र में यीशु की सेवकाई का अभिलेख मरकुस 6:7-13 में बारह चेलों के भेजे जाने के साथ समाप्त होता है। यीशु ने अपने 12 चेलों को पूरे फिलिस्तीन में राज्य के सुसमाचार का प्रचार करने और चमत्कार करने के लिए भेजा। परन्तु यीशु ने यह भी स्पष्ट किया कि जब चेले मन-फिराव और विश्वास के सुसमाचार को फैलाते हैं तो वे उनके साथ वैसा ही व्यवहार करेंगे जैसा उन्होंने यीशु के साथ किया था। कुछ लोग उन्हें स्वीकार करेंगे, जबकि दूसरे उन्हें अस्वीकार करेंगे। यीशु ने लगातार यह सिखाया कि विरोध बावजूद परमेश्वर का राज्य बढ़ता रहेगा।

कफरनहूम और गलील के आस-पास के क्षेत्र में यीशु की सुसमाचार की सेवकाई की जानकारी देने के बाद मरकुस 6:14-8:26 में मरकुस अपना ध्यान गलील के पार यीशु की सेवकाई में मसीहा की सामर्थ पर लगाता है।

गलील के पार

गलील के क्षेत्र के पार यीशु के कार्य को लिखते समय मरकुस निरन्तर उन्हीं विषयों पर बल देता रहा जिन्हें हम पहले ही देख चुके हैं। उसने राज्य की घोषणा के सामर्थी प्रसार, उत्साही भीड़ की प्रतिक्रिया, और यीशु के विरोधियों की बढ़ती संख्या के बारे में जानकारी दी।

परन्तु मरकुस ने नए तरीकों से भी चेलों पर ध्यान देना शुरू किया। उसने उन तरीकों पर बल दिया जिनके द्वारा यीशु ने चेलों को आगे आने वाले कठिन दिनों के लिए तैयार किया। और उसने इस बात की ओर ध्यान खींचा कि वे नियमित रूप से उसकी शिक्षा को गलत समझ लेते थे और उसके प्रति अपने समर्पण में चूक जाते थे।

गलील के पार यीशु की सेवकाई के बारे में मरकुस का वर्णन मरकुस 6:14-29 में यीशु की बढ़ती हुई ख्याति के साथ शुरू होता है।

अतीत में, जब यीशु ने अपनी सेवकाई को कफरनहूम के आस-पास के क्षेत्र तक सीमित रखा था तब उसकी ख्याति गलील के सम्पूर्ण क्षेत्र में फैल गई थी। और अब उसकी ख्याति निरन्तर उससे आगे फैलती रही। यीशु गलील के बाहरी क्षेत्रों में रहते थे और उनकी ख्याति पूरे फिलिस्तीन में, यहाँ तक कि राजा हेरोदेस तक पहुँच गई। मरकुस ने इस अवसर का प्रयोग यीशु की पहचान के बारे में एक प्रश्न को संबोधित करने के लिए भी किया। विशेषतः, मरकुस ने समझाया कि यीशु यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले नहीं हो सकते थे क्योंकि राजा हेरोदेस ने यूहन्ना की हत्या करवा दी थी।

इससे आगे, मरकुस 6:30-56 में मरकुस ने कई चमत्कारों की जानकारी दी। इस भाग की शुरूआत में यीशु भीड़ से दूर जाने का प्रयास करते हैं परन्तु बाद में इसमें सामर्थ के कई प्रदर्शनों का वर्णन है जो यह बताते हैं कि भीड़ क्यों एकत्रित हुई थी। यीशु ने 5,000 और 4,000 लोगों को खाना खिलाने, गलील की झील पर चलने, और अन्धों तथा बहरों को चंगा करने के द्वारा अपनी सामर्थ का प्रदर्शन किया। उसके चमत्कारों ने सारी सृष्टि पर उसके अखण्ड नियंत्रण का प्रदर्शन किया। और इन सामर्थी चमत्कारों के कारण यीशु जहाँ भी जाते भीड़ उनके पीछे हो लेती थी। कई बार वे यीशु से भी पहले पहुँच जाते थे।

यीशु के चमत्कारों के बाद, मरकुस 7:1-23 में मरकुस ने निरन्तर यीशु के विरोध की जानकारी दी। यीशु और फरीसियों के बीच पुराने नियम की व्यवस्था के उचित पालन, परम्पराओं के मूल्य, और पवित्रता की प्रकृति को लेकर टकराव हुआ। और इसके फलस्वरूप, यीशु और प्रभावशाली यहूदी पक्षों के बीच तनाव बढ़ गया।

अन्त में, मरकुस 7:24-8:26 में चमत्कारों के एक और समूह के बारे में जानकारी देता है। इस भाग की शुरूआत और समाप्ति यीशु द्वारा भीड़ को टालने और उससे बचने का प्रयास करने के कथनों से होती है। और इन कथनों के बीच में, यह बताता है कि यीशु ने यहूदियों और यूनानियों दोनों बीच में बहुत से आश्चर्यकर्म किए। और इसमें यह भी बताया गया है कि कुछ अन्यजातियों ने उस पर विश्वास किया।

आश्चर्यकर्मों की इस सूची के बीच में, मरकुस यीशु के चेलों की कमियों की ओर विशेष ध्यान खींचता है। पहले उसकी सेवकाई में, चेले बीज बोने वाले के दृष्टान्त को नहीं समझ सके थे, जैसा हम मरकुस 4:13 में देखते हैं। और इस समय, अब भी वे उसकी कुछ शिक्षाओं को समझ नहीं पा रहे थे। इसलिए, यीशु ने सीधे उनका सामना किया। सुनें मरकुस 8:14-17 में मरकुस क्या कहता है :

> चेले रोटी लेना भूल गए थे, और नाव में उन के पास एक ही रोटी थी। और उस ने उन्हें चिताया, कि देखो, फरीसियों के खमीर और हेरोदेस के खमीर से चौकस रहो। वे आपस में विचार करके कहने लगे, कि हमारे पास तो रोटी नहीं है। यह जानकर यीशु ने उन से कहा; तुम क्यों आपस में विचार कर रहे हो कि हमारे पास रोटी नहीं? क्या अब तक नहीं जानते और नहीं समझते? (मरकुस 8:14-17)

यीशु आत्मिक भ्रष्टता की बात कर रहा था परन्तु उसके चेलों ने समझा कि वह उनके पेट के लिए रोटी की बात कर रहा है। यह देखना आसान है कि यीशु उनसे क्षुब्ध क्यों हुए।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मरकुस द्वारा मसीहा के रूप में यीशु की सामर्थ की पूरी सूचना के दौरान, यीशु के चमत्कारों और उसकी शिक्षा ने प्रमाणित किया कि वह यथार्थ में मसीह था। तो इतने सारे लोगों ने उसका विरोध क्यों किया? उन्होंने उसे अस्वीकार क्यों किया? उसके चेलों को भी उसकी बात को समझने और उसके पीछे चलने में इतनी कठिनाई क्यों हो रही थी? विशाल रूप में इसका कारण यह है कि यीशु उस प्रकार का मसीहा नहीं था जैसी लोगों ने अपेक्षा की थी। उनकी अपेक्षा के अनुरूप राजनैतिक श्रेष्ठता की ओर उठने की बजाय, वह अपनी सामर्थ का प्रयोग सुसमाचार का प्रचार करने और दूसरों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कर रहा था।

> पहली सदी के प्रमाण यह सुझाव देते हैं कि यहूदी विशेष रूप से एक राजनैतिक और सैन्य मसीहा की प्रतीक्षा में थे जो परमेश्वर के राज्य को स्थापित करेगा और रोमियों को हराकर निकाल देगा और यरूशलेम को केन्द्र बनाकर परमेश्वर के राज्य की स्थापना करेगा। अतः इस अर्थ में यह बहुत ही राष्ट्रवादी था; परन्तु इसकी बजाय, यथार्थ में उसका दर्शन इससे कहीं बड़ा था। वह रोमियों के बारे में नहीं था; वास्तव में वह स्वयं सृष्टि के बारे में था। सृष्टि पाप में गिरी हुई थी और यीशु पाप को पलटने के लिए, एक बार फिर से परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी पर स्थापित करने के लिए आया था। और उस राज्य का अर्थ था पाप की पराजय, शैतान की पराजय, मृत्यु की पराजय। अतः यीशु केवल एक राजनैतिक विजय या केवल एक सैन्य विजय से कहीं बढ़कर किसी बात की प्रतीक्षा में थे।
>
> **डॉ. मार्क स्ट्रॉस**

> यहूदी लोग लगभग पाँच या छः सौ वर्षों से इस्राएल के राज्य की पुनः स्थापना के लिए किसी की प्रतीक्षा में थे। उनका कोई राजा नहीं था; उनकी अपनी कोई स्वतंत्रता नहीं थी। अतः, पहली सदी के फिलिस्तीन में अत्यधिक तनाव था और उस समय यीशु राज्य के सुसमाचार का प्रचार करते और यह संकेत देते हुए आते हैं कि वह मसीहा है, वे वास्तव में यीशु की बात पर ध्यान देते हैं कि वे क्या कह रहा है। उनकी क्या अपेक्षा थी? वे किसी ऐसे व्यक्ति की प्रतीक्षा में थे जो मन्दिर की पुनः स्थापना करेगा- उस समय का मन्दिर अन्यजाति के राजा हेरोदेस महान द्वारा पुनर्निर्मित किया गया था- और इसके बारे में सन्देह था कि क्या वास्तव में यही वह मन्दिर है जिसकी इच्छा परमेश्वर ने की थी। परन्तु उससे बढ़कर, वे चाहते थे कि परमेश्वर इस्राएल को छुटकारा दे, अपनी उन प्रतिज्ञाओं को पूरा करे जो उसने पुराने नियम में की थीं। परमेश्वर अपने वायदों को कहाँ पूरा करेगा? अतः वे इसी अपेक्षा में थे, परन्तु उससे उनका अर्थ यह था कि हम रोमी सरकार के अधीन हैं और यदि परमेश्वर अपने वायदों को पूरा करने वाला है तो निश्चित रूप से वह रोमियों से छुटकारा देगा। और संभवतः वे एक राजनैतिक स्वतंत्रता की अपेक्षा रखे हुए थे। और नये नियम में हम यीशु को यह दावा करते हुए देखते हैं कि वह मसीहा है, वह मन्दिर को पुनः स्थापित करने वाला है- जो वास्तव में सच्चा मन्दिर होगा- और वही राज्य को स्थापित करेगा, परन्तु वास्तव में वह एक राजनैतिक रूप से स्वतंत्र यहूदी राज्य नहीं होगा। परन्तु वास्तव में समाचार यह होगा कि राजा यीशु मसीह सारे संसार का प्रभु है। अतः यह उनकी अपेक्षा से थोड़ा भिन्न है, परन्तु यह किए गए वायदे की गहरी पूर्णता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

डॉ. पीटर वॉकर

मरकुस के मूल पाठकों ने संभवतः इस बात को लेकर बारह चेलों के समान ही तनाव का अनुभव किया होगा कि यीशु किस प्रकार का मसीहा था। रोम की कलीसिया की शुरूआत उस समय हुई थी जब मसीहियत को अच्छी तरह ग्रहण किया जाता था। और आरम्भिक कलीसिया के समान ही, उन्होंने भी संभवतः यह अपेक्षा की थी कि यीशु पृथ्वी पर अपने राज्य की स्थापना के लिए शीघ्र ही लौटेगा। परन्तु इसके विपरीत, आने वाले वर्ष नीरो के अधीन भयानक कष्ट और सताव लेकर आए। अतः, मरकुस ने यह स्पष्ट किया कि यीशु सदैव सामर्थी मसीहा रहेगा यद्यपि यीशु अपने अनुयायियों की अपेक्षाओं के अनुसार कार्य नहीं करता है। और सामर्थी मसीहा होने के कारण, विश्वासी यह भरोसा कर सकते हैं कि उपयुक्त समय पर अपने वायदे के अनुसार विजय के साथ वह अपने राज्य को स्थापित करेगा। परन्तु इस बीच, अब भी यीशु प्रभु है और वह हमें हमारे सामने आने वाली किसी भी कठिनाई में स्थिर रख सकता है।

मसीहा की सामर्थ का वर्णन करने वाले मरकुस के लेख के पश्चात्, अब हम उसके सुसमाचार के तीसरे भाग की ओर आते हैं : 8:27-30 में एक छोटी घटना जिसमें प्रेरितों द्वारा मसीहा की पुष्टि के बारे में बताया गया है।

प्रेरितों द्वारा मसीहा की पुष्टि

यह कैसरिया फिलिप्पी के मार्ग का एक विख्यात दृश्य है जिसमें यीशु ने अपने चेलों के इस अंगीकार को प्रकट करवाया कि वही मसीहा है। और मरकुस से संबंधित लगभग प्रत्येक विद्वान इससे सहमत है कि यह मरकुस के सुसमाचार का केन्द्रिय भाग है।

सुसमाचार के पहले पद में मरकुस ने लिखा, “परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह के सुसमाचार का आरम्भ।” यीशु “मसीह,” मसीहा थे। परन्तु उस पद के बाद, “मसीह” शब्द मरकुस के सुसमाचार में और कहीं नहीं आया। मरकुस ने यीशु को मसीह के रूप में नहीं बताया। उसने यह नहीं बताया था कि चेलों ने उसे मसीह कहा था या उसे देखने वाले लोगों ने अनुमान लगाया कि वह मसीह था या यह कि दुष्टात्माओं ने मसीह शब्द का प्रयोग किया था।

वास्तव में, यीशु को पहचानने का प्रयास करने वाला लगभग प्रत्येक व्यक्ति गलत था। उन्होंने सोचा कि वह केवल एक चमत्कार करने वाला था, या एक भविष्यवक्ता था, या यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, या एक पागल, या दुष्टात्मा से ग्रस्त था। परन्तु इस पल, यीशु ने निर्णय लिया कि चेलों से यह अंगीकार करवाने का समय आ गया है कि वह कौन है। मरकुस 8:27-29 में इस बातचीत को सुनें :

> और मार्ग में (यीशु) ने अपने चेलों से पूछा कि लोग मुझे क्या कहते हैं? उन्हों ने उत्तर दिया, कि “यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला; पर कोई-कोई; एलिय्याह; और कोई-कोई भविष्यवक्ताओं में से एक भी कहते हैं।” उस ने उन से पूछा; “परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?” पतरस ने उस को उत्तर दिया; “तू मसीह है।” (मरकुस 8:27-29)

प्रमाण के 8 अध्यायों के बाद, अन्ततः प्रेरितों ने अपने विश्वास की पुष्टि की कि यीशु मसीहा है, जो परमेश्वर के राज्य को ला रहा है।

प्रेरितों द्वारा मसीहा की पुष्टि के बाद, मरकुस के सुसमाचार का चौथा मुख्य भाग मसीहा के कष्ट के बारे में बताता है। यह भाग 8:31-15:47 तक है।

अपने सुसमाचार के पूर्वाद्ध में, मरकुस ने इस पर ध्यान केन्द्रित किया था कि किस प्रकार यीशु की सामर्थी सेवकाई के द्वारा चेलों ने यह तेजोमय पुष्टि की कि वही मसीहा है। परन्तु इस बिन्दू पर, मरकुस यीशु के मसीहारुपी कार्य के एक भिन्न पहलू पर बल देने लगाः यरूशलेम में उसका कष्ट और मृत्यु।

कष्ट सहने वाला मसीहा

मसीहा के कष्ट का मरकुस का अभिलेख तीन मुख्य भागों में विभाजित हैः अपने कष्ट और मृत्यु के लिए यीशु द्वारा चेलों को तैयार करना, यरूशलेम में यहूदी अगुवों के साथ उसका टकराव जिसने उसके कष्ट और मृत्यु को उकसाया, और अन्ततः, उसका कष्ट और मृत्यु। हम इन सबको देखेंगे और आइए हम मरकुस 8:31-10:52 में दी गई उसकी तैयारी से शुरू करते हैं।

तैयारी

यीशु द्वारा चेलों को तैयार करने का वर्णन करने वाले लेखन को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है जिनमें से प्रत्येक की शुरूआत यीशु द्वारा अपने कष्ट, मृत्यु और पुनरूत्थान की भविष्यवाणी के साथ होती है। मरकुस 8:31-9:29 में पहला भाग राज्य के प्रभु के रूप में यीशु पर केन्द्रित है।

मरकुस ने परमेश्वर के तेजोमय राज्य को पृथ्वी पर लाने के लिए यीशु की अनपेक्षित रणनीति-अर्थात् यीशु के कष्ट, मृत्यु और पुनरूत्थान-की जानकारी देने के साथ शुरू किया, जिसे मरकुस ने 8:31-9:1 में समझाया। इस पूरे भाग में अपनी शिक्षा के दौरान, यीशु ने अपने स्वयं के कष्ट के बारे में बात की और चेलों को चेतावनी दी कि जब वे उसकी सुसमाचार की सेवकाई को जारी रखते हैं तो उन्हें भी कष्ट सहना पड़ेगा।

इसके बाद, मरकुस 9:2-13 में मरकुस ने उस घटना की जानकारी देने के द्वारा यीशु के अद्वितीय अधिकार की ओर ध्यान खींचा जिसे सामान्यतः रूपान्तरण के नाम से जाना जाता है। इस घटना में, यीशु की महिमा दृश्य रूप में पतरस, याकूब और यूहन्ना पर प्रकट की गई। मूसा और एलिय्याह भी यह संकेत देते हुए यीशु के साथ प्रकट हुए कि यीशु ने पुराने नियम की व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं की शिक्षाओं की पुष्टि की और उन्हें जारी रखा है। परन्तु परमेश्वर ने चेलों को मूसा और एलिय्याह से भी बढ़कर यीशु का आदर करने और उसकी बात मानने की आज्ञा दी। इस घटना ने चेलों को यह याद दिलाते और प्रोत्साहन देते हुए तैयार किया कि उन्हें दूसरे सब लोगों से बढ़कर यीशु के प्रति विश्वासयोग्य रहना है और यीशु के प्रति विश्वासयोग्यता परमेश्वर और पुराने नियम में उसके प्रकाशन के प्रति विश्वासयोग्यता का शुद्धतम रूप है।

अन्ततः, मरकुस 9:14-29 में मरकुस ने दुष्टात्माओं को नियंत्रित करने की यीशु की योग्यता को प्रकट करने के द्वारा उसकी अद्वितीय सामर्थ पर ध्यान केन्द्रित किया। यीशु के चेले एक कठिन दुष्टात्मा को नहीं निकाल पाए और यीशु ने सिखाया कि ऐसी दुष्टात्माओं को केवल प्रार्थना के द्वारा ही निकाला जा सकता है। परन्तु स्वयं यीशु ने एक छोटी सी आज्ञा के द्वारा दुष्टात्मा को निकाल दिया। इस प्रकार, उसने सबके ऊपर अपनी श्रेष्ठता का प्रदर्शन किया और अपने चेलों को भरोसा दिलाया कि उसके पास अपनी इच्छा पूरी करने की असीम सामर्थ है। उसके मारे जाने पर अनुभव किए जाने वाले सन्देह और डर के बावजूद उसकी सामर्थ से उन्हें उसके प्रति अपने विश्वास में दृढ़ रहने की प्रेरणा मिलनी चाहिए थी।

यीशु द्वारा चेलों को अपने कष्ट, मृत्यु और पुनरूत्थान के लिए तैयार करने का दूसरा भाग परमेश्वर के राज्य के मूल्यों से है और वह मरकुस 9:30-10:31 में दिया गया है।

यीशु द्वारा यरूशलेम के लिए तैयारी के मरकुस के अभिलेख के प्रत्येक भाग के समान इस भाग की शुरूआत भी यीशु द्वारा अपने कष्ट, मृत्यु और पुनरूत्थान की भविष्यवाणी से होती है। यह इस बात को देखने

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

में हमारी सहायता करता है कि मरकुस अब भी उन घटनाओं के लिए चेलों की तैयारी पर बल दे रहा था। इस भविष्यवाणी के बाद, यीशु ने यह समझाने के द्वारा चेलों को तैयार करना जारी रखा कि परमेश्वर बातों को मनुष्यों की तरह नहीं जाँचता। इसलिए चाहे उन्हें कोई भी कष्ट उठाना पड़े और चाहे कितनी भी अजीब बातें क्यों न हों, उन्हें इन बातों को संसार के समान नहीं जाँचना है। बल्कि, उन्हें यह निश्चय रखना है कि परमेश्वर यीशु की महिमा के लिए अपने राज्य को लाने के लिए उन घटनाओं का प्रयोग कर रहा है।

मरकुस 9:30-31 में यीशु की भविष्यवाणी के बाद, मरकुस ने राज्य के मूल्यों पर यीशु की शिक्षा के बारे में बताया। इस भाग में, यीशु ने प्रदर्शित किया कि किस प्रकार सांसारिक सहज ज्ञान का जीवन के पाँच क्षेत्रों में परमेश्वर के सत्य से सामना होता है।

पहला, यीशु ने मरकुस 9:32-42 में आदर के बारे में बात करते हुए संकेत दिया कि परमेश्वर के राज्य में सबसे अधिक आदर उन्हें मिलता है जिन्हें इस जीवन में सबसे कम आदर मिला हो।

दूसरा, मरकुस 9:43-50 में यीशु ने महत्व के बारे में बात की। विशेषतः, उसने अपने चेलों को किसी भी ऐसी बात से छुटकारा पाने का निर्देश दिया जो उन्हें परमेश्वर के राज्य के लक्ष्यों का अनुसरण करने से रोकती हैं चाहे इस जीवन में वे कितनी भी मूल्यवान क्यों न प्रतीत हों।

तीसरा, यीशु ने मरकुस 10:1-12 में विवाह के बारे में बात की। यीशु का अर्थ था कि विवाह और तलाक अन्तिम रूप से परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार होने चाहिए न कि मानवीय व्यवस्था के अनुसार- चाहे मानवीय व्यवस्था सहज बोध के अनुसार कितनी भी उचित क्यों न लगे।

चौथा, यीशु ने मरकुस 10:13-16 में पुनः बच्चों के बारे में बात की। यीशु ने पहले जो कहा था उसके बावजूद चेले अब भी बच्चों को उसके पास आने से रोक रहे थे। इसके जवाब में, यीशु ने उन्हें याद दिलाया कि परमेश्वर ने इन बच्चों को पहले ही राज्य दे दिया है और इसलिए बच्चों को रोकने के द्वारा चेले परमेश्वर का विरोध कर रहे थे।

और पाँचवाँ, यीशु ने मरकुस 10:17-31 में धन के बारे में बात की। यह एक परिचित धनी युवा सरदार की कहानी है जो यीशु की इस बात से उदास हो गया कि धन के साथ उसका लगाव उसे परमेश्वर के राज्य के मूल्यों को अपनाने से रोक रहा था।

शिक्षा के इन प्रत्येक भागों में यीशु ने परमेश्वर के राज्य के मूल्यों को समझाया ताकि उसके चेले उसके कष्ट और मृत्यु को स्वीकार करने के के साथ-साथ उस कठिनाई के लिए तैयार हो सकें जिसे उसके अनुयायियों के रूप में उन्हें सहना पड़ेगा।

मरकुस 10:32-52 में यरूशलेम के लिए यीशु की तैयारी के मरकुस के अभिलेख का तीसरा भाग परमेश्वर के राज्य में नेतृत्व से संबंधित है।

मरकुस 10:32-34 में, अपने कष्ट, मृत्यु और पुनरूत्थान की भविष्यवाणी के बाद, यीशु ने राज्य में नेतृत्व के प्रश्न पर तीन हिस्सों में बात की।

पहला, मरकुस 10:35-40 में उसने कहा कि याकूब और यूहन्ना उसके कष्ट में सहभागी होंगे। वे उसी कटोरे में से पीयेंगे और उसके बपतिस्मा को लेंगे। ये रूपक बताते हैं कि यीशु के प्रति अपनी सेवाओं के कारण उसके अनुयायियों को उसके कष्टों में सहभागी होना पड़ेगा।

दूसरा, यीशु ने मरकुस 10:40-45 में परमेश्वर के राज्य में नेतृत्व का वर्णन सेवा के रूप में किया। राज्य के मूल्यों के बारे में बात करते समय पहले भी उसने दो बार इस विचार का वर्णन किया था। परन्तु यह पहली बार था जब उसने उसके पीछे के कारण को समझाया : मसीही अगुवों को सेवक बनना है क्योंकि वे मसीह के

आदर्श का पालन करते हैं, जिसने पाप के लिए कष्ट सहने और मरने के द्वारा स्वयं एक सेवक के रूप में व्यवहार किया।

तीसरा, यीशु ने अन्धे बरतिमाई पर करूणा करने के द्वारा सेवक के रूप में नेतृत्व की प्रेरणा का प्रदर्शन किया। सेवक अगुवों को केवल इस कारण त्याग नहीं करना चाहिए कि वे स्वर्ग में बड़ा प्रतिफल चाहते हैं, बल्कि इसलिए क्योंकि उनमें वास्तव में उन लोगों के प्रति तरस है जिनकी वे सेवा करते हैं।

> यीशु मसीही अगुवों को अलग बनने के लिए, अपने लोगों के सेवक बनने के लिए बुलाता है। इस अद्‌भुत परिच्छेद में, मरकुस **10:45** में, यीशु अपने सच्चे अनुयायियों के नेतृत्व के प्रकार को आस-पास के यूनानी-रोमी संस्कृति के नेतृत्व से अलग करता है। मरकुस के दिनों में नेतृत्व का प्रमुख उदाहरण लोगों पर ताकत और अधिकार का रोमी प्रदर्शन था। और यीशु ने कहा, "मैं सेवा करवाने नहीं परन्तु सेवा करने और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपना प्राण देने आया हूँ।" अतः, यीशु अपने अनुयायियों को उसके नेतृत्व के प्रकार का पालन करने की आज्ञा दे रहा है, एक सेवक के रूप में नेतृत्व करने के लिए कह रहा है, न कि रोमी अधिकार के उदाहरण का पालन करने के लिए जो मरकुस के समय में अत्यधिक प्रचलित था।
>
> डॉ. ग्रेग पेरी

यीशु ने बल दिया कि परमेश्वर के राज्य में नेतृत्व को नेतृत्व के सांसारिक प्रारूप के आधार पर नहीं बनाया जा सकता है। इसके विपरीत, उसे उसके स्वयं के कष्ट के उदाहरण का पालन करने की आवश्यकता है।

एक प्रकार से, यह समाचार अवश्य ही रोम में मरकुस के पाठकों के लिए दिल तोड़ने वाला रहा होगा। उन्हें यह भरोसा दिलाने की बजाय कि उनका कष्ट असामान्य था और वह जल्द ही समाप्त हो जाएगा, मरकुस का सुसमाचार उन्हें यह निश्चय दिलाता है कि कष्ट उनके लिए मापदंड है जो मसीह का अनुसरण करते हैं। परन्तु साथ ही, इस समाचार का एक उत्साहजनक पक्ष भी रहा होगा। कलीसिया का कष्ट विजय के लिए मसीह की योजना का भाग है। जैसे पौलुस ने रोमियों 8:18 में लिखा :

> क्योंकि मैं समझता हूँ, कि इस समय के दुःख और क्लेश उस महिमा के सामने, जो हम पर प्रकट होने वाली है, कुछ भी नहीं हैं। (रोमियों 8:18)

यीशु द्वारा अपने चेलों को तैयार करने की जानकारी देने के बाद, मरकुस 11:1-13:37 में मरकुस यहूदी अगुवों के साथ यीशु के टकराव की ओर मुड़ता है।

सामना

टकराव का मरकुस का अभिलेख दो भागों में विभाजित है : पहला 11:1-12:44 में विरोध की घटनाएँ। और दूसरा, 13:1-37 में जैतून का व्याख्यान।

अपने सुसमाचार के इस पूरे भाग में मरकुस ने बताया कि किस प्रकार यीशु ने यहूदी अगुवों को असहाय किया। मरकुस के सुसमाचार के पहले के भागों में यीशु का यहूदी अगुवों से विवाद नहीं हुआ था; उसका विरोध मुख्यतः तब हुआ जब लोगों ने उसकी करूणा की सेवकाई पर आपत्ति जताई थी। परन्तु इस

भाग में मरकुस ने बताया कि यीशु ने सक्रियता से विरोध का प्रयास किया ताकि वह अपनी क्रूस मृत्यु की ओर बढ़ सके।

पहला, मरकुस 11:1-11 में यीशु के यरूशलेम में विजयी प्रवेश ने सार्वजनिक रूप से यह घोषित किया कि वह मसीहा और इस्राएल का वैध राजा है।

फिर, मरकुस 11:12-14, 20-25 में सूखे हुए अंजीर के पेड़ के समान इस्राएल को दोषी ठहराने, और पद 15-19 में मन्दिर के शुद्धिकरण ने प्रत्यक्ष रूप से यहूदी अगुवों के नैतिक दृष्टिकोण पर हमला किया और लोगों पर उनके अधिकार एवं प्रभाव को नीचा दिखाया।

यीशु ने मरकुस 11:27-12:12 में महायाजकों, व्यवस्थापकों, और पुरनियों से भी वाद-विवाद किया। उसके अधिकार को दी गई उनकी चुनौती को जीतने के बाद, उसने दाख की बारी के किसानों का दृष्टान्त बताया जिसने यहूदी नेतृत्व पर परमेश्वर के विरूद्ध हत्या का आरोप लगाया। इस समय, वे उसे गिरफ्तार करने के लिए तैयार थे, परन्तु भीड़ के डर से वे पीछे हट गए।

फिर, मरकुस 12:13-17 में यीशु ने रोमी करों के मामले में फरीसियों और हेरोदियों से वाद-विवाद किया और उनका खण्डन किया।

इसके बाद, मरकुस 12:18-27 में यीशु ने साबित किया कि पुनरूत्थान के बारे में पवित्रशास्त्र की शिक्षा को फरीसियों ने गलत समझा था।

और अन्ततः, मरकुस 12:28-44 में उसने व्यवस्थापकों पर हमला किया। यद्यपि यीशु ने माना कि उनमें से कुछ लोग व्यवस्था को जानते थे, परन्तु उसने बल दिया कि वे मुख्यतः लोभ और सांसारिक महत्वाकांक्षा द्वारा नियंत्रित थे।

किसी न किसी तरह, यीशु ने प्रभावशाली यहूदियों के प्रत्येक समूह- याजकों, व्यवस्थापकों, फरीसियों, हेरोदियों, और सदूकियों- का सार्वजनिक रूप से सामना किया। उसने प्रत्येक समूह को उससे घृणा करने और उसे मार डालने की खोज में रहने का एक कारण दिया ताकि वह उन्हें अपनी मृत्यु के लिए उकसा सके।

यीशु द्वारा यहूदी अगुवों के सामने का दूसरा मुख्य भाग यीशु और उसके चेलों के बीच का व्याख्यान है। इसे सामान्यतः जैतून व्याख्यान कहा जाता है क्योंकि यह जैतून के पहाड़ पर दिया गया था। विशाल रूप में, यह मरकुस 13:1-37 तक है। इस भाग में, यीशु ने अपने चेलों को भविष्य में आने वाली कठिनाई की चेतावनी दी ताकि वह उन पर अचानक न आ पड़े। उसने उन्हें बताया कि उसके बारे में गवाही देने के कारण उन्हें घसीटकर शासकों के सामने ले जाया जाएगा। उन्हें पीटा जाएगा। उनसे घृणा की जाएगी। उनके परिवार बिखर जाएँगे। वे प्राकृतिक आपदाओं और बड़े क्लेशों को सहेंगे। वास्तव में, उसने यह स्पष्ट किया कि सताव और कष्ट उसके दूसरे आगमन तक मसीही कलीसिया की विशेषता बने रहेंगे।

परन्तु यीशु ने उन्हें परमेश्वर के राज्य की अन्तिम विजय का आश्वासन देते हुए बड़ी आशा भी दी। उदाहरण के लिए, मरकुस 13:26-27 में उसने उन्हें याद दिलाया कि यदि वे उसके प्रति विश्वासयोग्य बने रहते हैं तो सामर्थ और महिमा के साथ परमेश्वर के राज्य की पूर्णता के समय की महान विजय उनकी होगी।

चेलों से कहे गए यीशु के वचन निरन्तर यहूदी अगुवों को उसके विरूद्ध भड़काते रहे। उदाहरण के लिए, मरकुस 13:1-2 में यीशु ने अपने चेलों को सिखाया कि मन्दिर ढ़ा दिया जाएगा। परन्तु जैसा हम मरकुस 14:58 में देखते हैं, उसके वचनों को अनसुना कर दिया गया और उनकी गलत व्याख्या की गई, इसलिए मुकद्दमे के दौरान उस पर स्वयं मन्दिर को नष्ट करने की योजना बनाने का झूठा आरोप लगाया गया।

अब जबकि हम यीशु द्वारा अपने चेलों को तैयार करने और यरूशलेम और यहूदी अगुवों के साथ टकराव के संबंध में मसीह के कष्ट के बारे में मरकुस के अभिलेख को देख चुके हैं, तो हम मरकुस 14:1-15:47 में यीशु के कष्ट और मृत्यु के अनुभव को देखने के लिए तैयार हैं।

अनुभव

यीशु के कष्ट और मृत्यु का यथार्थ अनुभव परिचित घटनाओं से भरा है : यहूदा द्वारा धोखा, पतरस के इनकार की घोषणा, गतसमने में यीशु के साथ जागते रहने और प्रार्थना करने में चेलों की असफलता, यीशु की गिरफ्तारी, दो मुकद्दमें और पतरस का इनकार, और अन्ततः यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना और दफनाया जाना।

ये काले, डरावने अध्याय हैं। इनका मिजाज पूर्वाभासी है। वे असफलता से भरे हैं : यहूदी अगुवों की असफलता, यहूदी और रोमी न्यायिक प्रणालियों की असफलता, और चेलों की असफलता। अत्याचार की शिकार रोमी कलीसिया को लिखते समय मरकुस ने स्पष्ट किया कि यरूशलेम में मसीहियत की प्रसव पीड़ा इतनी ही तीव्र थी जितनी रोम में।

यीशु द्वारा कष्ट और मृत्यु के अनुभव के मरकुस के अभिलेख को चार मुख्य भागों में बाँटा जा सकता है, जिनकी शुरूआत मरकुस 14:1-11 में दफनाए जाने के लिए उसके अभिषेक से होती है। इस भाग में, मरकुस ने कुछ अत्यधिक महत्वपूर्ण विवरणों की जानकारी दी है। पहला, उसने कहा कि महायाजक और व्यवस्थापक यीशु को गिरफ्तार करने और मारने के अवसर की खोज में थे। दूसरा, एक स्त्री ने अत्यधिक महँगे इत्र से यीशु का अभिषेक किया, और उसने यह कहकर जवाब दिया कि उसने उसके दफनाए जाने के लिए यह किया है। इस प्रकार, यीशु ने संकेत दिया कि वह निकट भविष्य में मार डाला जाएगा। तीसरा, यहूदा इस्करियोती यीशु को महायाजकों और व्यवस्थापकों के हाथ पकड़वाने का षड़यंत्र रचने लगा। इसे हम यीशु के कष्ट और मृत्यु की कहानी में एक मोड़ के रूप में देख सकते हैं। उसकी मृत्यु अब एक धुँधली धमकी नहीं रह गई थी बल्कि निकट भविष्य में होने वाला यथार्थ बन गई थी।

फिर, मरकुस 14:12-42 में मरकुस ने अपने चेलों के साथ यीशु के अन्तिम घण्टों के बारे में जानकारी दी। मरकुस की कहानी के इस भाग की शुरूआत मरकुस 14:12-31 में यीशु और उसके चेलों द्वारा अन्तिम भोज की तैयारी करने और खाने के साथ होती है। इसी भोज के दौरान यीशु ने प्रभु भोज के मसीही संस्कार की शुरूआत की थी। उसने इस समय का उपयोग अपने कष्ट और मृत्यु के दौरान चेलों की सहायता के लिए उन्हें कुछ अन्तिम निर्देश देने के लिए भी किया। उदाहरण के लिए, उसने चेतावनी दी कि वे सब बिखर जाएँगे और उसने पतरस के इनकार की भविष्यवाणी की।

अन्तिम भोज के बाद, वह गतसमनी के बगीचे में गया जैसा हम मरकुस 14:32-42 में देखते हैं। इस अनुच्छेद के अनुसार, यीशु अत्यधिक परेशान और व्याकुल था और दुःख के मारे उसका प्राण निकलने पर था। स्पष्ट है कि अपनी क्रूस की मृत्यु की प्रतीक्षा में यीशु बहुत कष्ट सह रहा था।

यीशु के कष्ट और मृत्यु के अनुभव के मरकुस के विवरण का तीसरा भाग मरकुस 14:43-15:15 में यीशु की गिरफ्तारी और मुकद्दमों का है। इस भाग की शुरूआत मरकुस 14:43-52 में यीशु के चेले यहूदा इस्करियोती द्वारा उसे पकड़वाने से होती है। मरकुस 14:53-65 में यहूदी अगुवों के सामने उसका मुकद्दमा होता है। फिर हम मरकुस 14:66-72 में पतरस द्वारा यीशु को जानने या उसके पीछे चलने से इनकार करने की सूचना के बारे में पढ़ते हैं। और अन्ततः, मरकुस 15:1-15 में हम रोमी राज्यपाल पिलातुस के सामने उसके मुकद्दमे के बारे में पढ़ते हैं। इन अपमानजनक अनुभवों के अन्त में यीशु को कोड़े मारे जाते हैं और फिर उसे क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए रोमी सैनिकों को सौंप दिया जाता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यीशु के कष्ट और उसकी मृत्यु के अनुभव के मरकुस के विवरण के चौथे भाग में मरकुस 15:16-47 में उसे क्रूस पर चढ़ाए जाने के बारे में बताया गया है। इसकी शुरूआत यीशु को पीटे जाने, अपमानित करने, और एक अपराधी के समान क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए सैनिकों को सौंपने से होती है। मानवीय दृष्टिकोण से यह कष्ट सहने के बाहर था।

इस तथ्य ने इन घटनाओं को मरकुस के मूल पाठकों, रोमी मसीहियों से दृढ़ता से जोड़ा होगा कि यीशु ने रोमियों के हाथों इस दुर्व्यवहार को सहन किया था। उन्होंने अपने और अपने प्रभु के कष्टों के बीच समानताओं को शीघ्र ही देख लिया होगा और इससे उन्हें अपनी स्वयं की कठिनाईयों के बीच स्थिर रहने की प्रेरणा मिली होगी।

परन्तु यीशु के कष्ट का सबसे बद्तर भाग यह था कि संसार का पाप उस पर लाद दिया गया था और उसे पिता परमेश्वर के क्रोध को सहना पड़ा था। अन्ततः उसकी मृत्यु के बाद, उसके शव को दफनाने के लिए तैयार किए बिना ही कब्र में रख दिया गया क्योंकि सब्त से पहले समय नहीं बचा था।

अब जबकि हम मसीहा की घोषणा, मसीहा की सामर्थ, प्रेरितों द्वारा मसीहा की पुष्टि, और मसीहा के कष्ट को देख चुके हैं, तो अन्ततः हम मरकुस 16:1-8 में मसीहा की विजय की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं, जहाँ मरकुस ने हमारे प्रभु के पुनरूत्थान का वर्णन किया है।

मसीहा की विजय

इस भाग की बातों को देखने से पहले हमें यह समझाने के लिए रूकना चाहिए कि हम यह क्यों कहते हैं कि मरकुस का सुसमाचार 16:8 में समाप्त हो जाता है। आखिर, हम में से अधिकाँश लोगों की बाइबल में इस अध्याय में बीस पद हैं। परन्तु अधिकाँश बाइबलों में यह टिप्पणी भी दी गई है कि 9-20 तक के पद मरकुस के सुसमाचार के सर्वाधिक विश्वसनीय प्राचीन हस्तलेखों में नहीं पाए जाते।

मरकुस के प्राचीन यूनानी हस्तलेख तीन अलग-अलग प्रकार से समाप्त होते हैं। हस्तलेखों का एक समूह पद 8 में समाप्त होता है। दूसरा समूह पद 20 में समाप्त होता है। और तीसरा समूह पद 8 के बाद दो कथनों में समाप्त होता है।

सारे प्रमाणों के एक सतर्क मूल्यांकन के आधार पर अधिकाँश विद्वानों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि मरकुस ने अपना सुसमाचार पद 8 के साथ समाप्त कर दिया था। अधिकाँश प्राचीन एवं अधिकाँश महत्वपूर्ण हस्तलेखों की परम्पराएँ छोटी समाप्ति के मौलिक होने के पक्ष में हैं।

बहुत से विद्वानों का मानना है कि अन्य दो समाप्तियाँ जोड़ी गई प्रतीत होती हैं क्योंकि एक शास्त्री को यह विचार असुविधाजनक महसूस हुआ कि मरकुस ने सुसमाचार को इस कथन के साथ समाप्त किया, “वे डर गई थीं।” परन्तु शास्त्री की यह असहजता निराधार थी। यथार्थ में, डर, भय और आश्चर्य के विषयों को इस पूरे सुसमाचार में देखा जा सकता है। और इस कारण, डर पर बल इस सुसमाचार को समाप्त करने का एक अत्यधिक उपयुक्त तरीका है। यथार्थ में, यह मरकुस के मूल पाठकों के अनुभवों के भी उपयुक्त है। जब उन्होंने यीशु के पुनरूत्थान के बाद सताव का सामना किया तो उन्हें यह जानकर निश्चित रूप से सांत्वना मिली होगी कि यीशु के आरम्भिक चेलों ने भी भय का अनुभव किया था।

अब आइए हम मरकुस 16:1-8 में यीशु के पुनरूत्थान के अभिलेख की ओर मुड़ते हैं। मरकुस का पुनरूत्थान का अभिलेख दूसरे सुसमाचारों के अभिलेख से छोटा है, परन्तु यह संक्षिप्तता पूर्णतः इस सुसमाचार की रूपरेखा के स्वभाव में है। जैसे आपको याद होगा, सुसमाचार की शुरूआत में मसीहा की घोषणा बहुत संक्षिप्त थी और उसी प्रकार प्रेरितों द्वारा मसीहा की पुष्टि भी संक्षिप्त थी, जो इस सुसमाचार का मुख्य भाग है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मसीहा की विजय के इस भाग की शुरूआत उन स्त्रियों से होती है जो यीशु की मृत्यु और गाड़े जाने के तीसरे दिन उसके शव पर सुगन्धद्रव्य लगाने के लिए उसकी कब्र पर आईं। वे एक स्वर्गदूत से मिलीं जिसका संदेश स्पष्ट और प्रत्यक्ष था। यीशु ने मृत्यु को जीत लिया था और वह विजयी होकर जी उठा था, जैसे उसने अपनी सेवकाई के दौरान बहुत बार घोषणा की थी। मरकुस 16:6-8 में मरकुस के सुसमाचार के अन्त को सुनें :

> (स्वर्गदूत) ने उन से कहा, "चकित मत हो, तुम यीशु नासरी को, जो क्रूस पर चढ़ाया गया था, ढूँढ़ती होः वह जी उठा है; यहाँ नहीं है; देखो, यही वह स्थान है, जहाँ उन्हों ने उसे रखा था।" ...वे निकलकर कब्र से भाग गईं; क्योंकि कंपकंपी और घबराहट उन पर छा गई थीं और उन्हों ने किसी से कुछ न कहा, क्योंकि डरती थीं। (मरकुस 16:6-8)

मरकुस की कहानी के संदर्भ में स्त्रियों के व्यवहार को समझा जा सकता हैः वे डर गई थीं। इस सुसमाचार में लगभग प्रत्येक व्यक्ति ने परमेश्वर की सामर्थी उपस्थिति का प्रत्युत्तर भय, आश्चर्य, और डर से दिया।

> यह मरकुस का कथन है। यहाँ स्त्रियों को जाकर उसके पुनरूत्थान की घोषणा करने की आज्ञा दी जाती है और उसकी बजाय वे भयभीत हैं और भाग जाती हैं और किसी से कुछ नहीं कहती हैं। फिर भी, दो हजार साल बाद हम इसे पढ़ रहे हैं और हम जानते हैं यह कहानी का अन्त नहीं है; हम जानते हैं कि परमेश्वर का सत्य विजयी हुआ, और इसलिए यह पुनः एक हार है जिसे हम बार-बार पवित्रशास्त्र में देखते हैं जहाँ मानवीय असफलता की तुलना परमेश्वर की विश्वासयोग्यता और परमेश्वर के उद्देश्यों के साथ की गई है।
>
> **डॉ. रॉबर्ट प्लम्मर**

परमेश्वर के लोग इस जीवन में कमजोरी और आवश्यकता का अनुभव करेंगे। यह रोम में मरकुस के मूल पाठकों के लिए सच था और हर युग की कलीसिया के लिए भी यही सच रहा है। परन्तु सुसमाचार की खुशखबरी यह है कि परमेश्वर का राज्य आ गया है। मसीहा ने परमेश्वर के लोगों के शत्रुओं- यहाँ तक कि अन्तिम शत्रु, मृत्यु को भी जीत लिया है। और इस कारण, परमेश्वर के लोग राज्य के सुसमाचार के शत्रुओं का साहस के साथ सामना कर सकते हैं। विजय पहले से ही हमारी है।

मरकुस के सुसमाचार की पृष्ठभूमि, संरचना और विषय-सूची पर विचार करने के बाद, अब हम इसके कुछ प्रमुख विषयों को देखने के लिए तैयार हैं।

प्रमुख विषय

मसीहा या मसीह के रूप में यीशु की पहचान निःसन्देह वह सर्वाधिक निर्णायक विषय है जिसे मरकुस ने अपने सुसमाचार में बताया है। मरकुस यह सुनिश्चित करना चाहता था कि उसके पाठक यह जानते हैं कि

यीशु वास्तव में उन्हें उनके पापों से बचाने के लिए आया था। यीशु वह राजा था जिसने मृत्यु को जीत लिया था। वह सामर्थी, अद्‌भुत, तेजोमय था और उसे रोका नहीं जा सकता था। वह मुक्तिदाता था जो परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी पर लाने के द्वारा उन्हें बचाने के लिए आया था। और इस तथ्य के बावजूद कि अब वे उसे देख नहीं सकते हैं, अब भी सब कुछ उसके नियंत्रण में है और उसने उस उद्धार को पूरा करने के लिए वापस आने का वायदा किया है जिसे उसने आरम्भ किया था।

इस अध्याय में हमारे उद्देश्यों के लिए हम यीशु के मसीहा होने से संबंधित विषय को दो भागों में विभाजित करेंगे। पहला, हम कष्ट सहने वाले मसीहारुपी सेवक के रूप में यीशु पर विचार करेंगे। और दूसरा, हम जीतने वाले मसीहा-रुपी राजा के रूप में उसकी पहचान को देखेंगे। आइए कष्ट सहने वाले दास के रूप में यीशु की भूमिका से आरम्भ करते हैं।

कष्ट सहने वाला दास

कष्ट सहने वाले सेवक के रूप में यीशु पर हमारी चर्चा तीन भागों में विभाजित होगी। पहला, हम मसीहा के संबंध में कुछ यहूदी अपेक्षाओं का वर्णन करेंगे। दूसरा, हम कष्ट सहने वाले दास के रूप में यीशु की सेवकाई की प्रकृति पर संक्षेप में प्रकाश डालेंगे। और तीसरा, हम उस उपयुक्त प्रत्युत्तर के बारे में बात करेंगे जिसे मरकुस यीशु के इस मसीहारुपी पहलू के बारे में अपने पाठकों से चाहता था। आइए पहले हम मसीहा के बारे में कुछ यहूदी अपेक्षाओं को देखते हैं जो यीशु के दिनों में प्रचलित थी।

यहूदी अपेक्षाएँ

मसीह के समय से सैंकड़ों वर्ष पूर्व इस्राएलियों का एक बहुसंख्यक भाग वायदे के देश से बाहर रहता था। और जो लोग वायदे के देश में रहते थे वे अन्यजाति शासकों की तानाशाही में कष्ट सह रहे थे। पहले कसदी, फिर मादी और फारसी, फिर यूनानी, और अन्ततः रोमी। और कष्ट के इस लम्बे इतिहास के कारण यहूदी धर्मविज्ञानियों ने पुराने नियम की भविष्यवाणियों पर बल दिया कि परमेश्वर इस्राएल को राज्य लौटाने के लिए एक मसीहारुपी मुक्तिदाता को भेजेगा।

यहूदी मसीहारुपी आशाओं के विविध रूप थे। उदाहरण के लिए, जेलट यह मानते थे कि परमेश्वर यह चाहता है कि इस्राएल रोमी अधिकारियों के विरूद्ध विद्रोह करने के द्वारा मसीहा के दिन को लाए। विभिन्न रहस्यवादी समूहों का मानना था कि परमेश्वर अपने शत्रुओं का नाश करने और अपने लोगों को पुनः बसाने के लिए अलौकिक रूप से हस्तक्षेप करेगा। फरीसियों जैसे व्यवस्थावादी लोग भी थे, जिनका यह मानना था कि परमेश्वर तब तक हस्तक्षेप नहीं करेगा जब तक इस्राएल व्यवस्था का पालन नहीं करता है। अतः, यीशु के दिनों में बहुत से लोग अपने मसीहा के आगमन की प्रतीक्षा में थे।

वह एक नम्र, कष्ट सहने वाले सेवक के रूप में आया। यहूदी मसीहारुपी आशाएँ सदियों पूर्व दाऊद के शासन के समान ही मसीहा के शासन के अधीन एक राज्य की खोज में थीं। परन्तु यीशु ने अपनी सांसारिक सेवकाई के दौरान इस प्रकार के राज्य की स्थापना का प्रयास भी नहीं किया। और इसी कारण बहुत से लोगों ने मसीहा के रूप में उसे अस्वीकार कर दिया था।

रूचिकर बात यह है कि एक कष्ट सहने वाले सेवक के रूप में मसीहा का विचार नया नहीं था। पुराने नियम के भविष्यवक्ता यशायाह ने विशेषतः अध्याय 53 में मसीहा की इस भूमिका का संकेत दिया था, जो नये नियम में बार-बार यीशु पर लागू होता है। हम यहाँ तक कह सकते हैं कि यदि यीशु ने कष्ट नहीं सहा होता और सेवा नहीं की होती तो उसने मसीहा के रूप में पुराने नियम की शर्तों को पूरा नहीं किया होता। और इसलिए,

मसीह के रूप में योग्य ठहराने से बढ़कर, यीशु की कष्टदायक सेवा यह सबूत है कि वही वास्तव में मसीह है। परन्तु यीशु के जीवनकाल में केवल कुछ ही लोगों ने पुराने नियम के इस विषय को पहचाना। उनमें से अधिकाँश मसीहा के संबंध में तत्कालीन यहूदी अनुमानों के प्रति इतने अधिक समर्पित थे कि उन्होंने मसीह के आने पर उसे पहचाना ही नहीं।

> स्पष्टतः मसीहा का विचार पुराने नियम में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। मसीहा अभिषिक्त है, अभिषिक्त राजा है। यह सोचना रूचिकर है कि यदि इस्राएल आज्ञाकारी होता और उसने मानवीय राजा की माँग नहीं की होती तो मसीह कैसे आता? परन्तु उन्होंने माँगा। इसलिए, आप ऐसे "अभिषिक्तों" को देख सकते हैं जो अपने लोगों की परवाह नहीं करते थे और जो संसार में परमेश्वर के न्याय की स्थापना नहीं कर रहे थे और जो स्व-केन्द्रित थे। और इसीलिए पुराने नियम यह चाहत उभरती है। "काश, कोई ऐसा मसीहा होता जो वास्तव में वैसा ही होता जैसा एक मसीहा को होना चाहिए!" और आप आने वाले राजा की तस्वीर को देखते हैं, परन्तु विशेषतः यशायाह में इस आने वाले राजा और पवित्र आत्मा के बीच एक रूचिकर संबंध है। पुराने नियम के लोग केवल मसीहा को ही नहीं बल्कि यह भी चाहते हैं कि पवित्र आत्मा आकर उन्हें तोराह (व्यवस्था) को मानने में समर्थ बनाए। अतः यह देखना रूचिकर है कि विशेषतः यशायाह किस प्रकार मसीहा और आत्मा के बीच संबंध को चित्रित करता है। वह आत्मा से परिपूर्ण होगा; वह पवित्र आत्मा द्वारा अभिषिक्त है। वह आत्मा के द्वारा बोलता है। और इसलिए, प्रेरित आश्चर्यचकित प्रतीत नहीं होते हैं जब जी उठने पर यीशु उनसे कहते हैं, "पिता की प्रतिज्ञा के लिए यरूशलेम में प्रतीक्षा करो।" यह कुछ इस प्रकार है कि, "अरे, अन्ततः मसीहा ने कुछ ऐसा कहा है जिसकी हमने मसीहा से अपेक्षा की थीः 'मैं पवित्र आत्मा को भेजने जा रहा हूँ।'" परन्तु उन्हें यह समझ नहीं आया कि परमेश्वर के न्याय और आत्मा के इस युग को लाने के लिए मसीहा को क्या कीमत चुकानी होगी। उन्होंने यशायाह 53 को यशायाह 11 से नहीं जोड़ा। उन्होंने इस तथ्य को नहीं जोड़ा कि न्याय, शान्ति और आत्मा के इस जीवन को लाने के लिए मसीहा को मरना होगा।
>
> **डॉ. जॉन ऑस्वाल्ट**

इन यहूदी अपेक्षाओं को मन में रखते हुए, आइए हम कष्ट सहने वाले सेवक के रूप में यीशु की सेवकाई की ओर मुड़ते हैं।

यीशु की सेवकाई

यीशु एक चौंकाने वाला मसीहा था क्योंकि उसने मरने के द्वारा जय पाई। सुसमाचार के आरंभ में, मरकुस ने संघर्षों का वर्णन किया जो अन्ततः उसकी क्रूस की मृत्यु की ओर ले गए। और सुसमाचार के उत्तरार्द्ध में पहले यीशु के आने वाले कष्ट और उसकी मृत्यु का विषय हावी है और बाद में उसके वास्तविक कष्ट और मृत्यु का विषय।

और यीशु के कष्ट पर महत्व के समानान्तर उसकी सेवा पर भी महत्व दिया गया है। उसने बहुत से विभिन्न प्रकार के लोगों को चंगा किया और उनके बीच सेवकाई की। उसने पापियों को छुड़ाने के लिए

छुड़ौती के रूप में अपना जीवन दे दिया। उसने परमेश्वर लोगों के लाभ के लिए प्रत्येक मोड़ पर परमेश्वर की इच्छा को पूरा किया।

एक जगह जहाँ मरकुस ने कष्ट और सेवा के इन विषयों को सामर्थी रूप से जोड़ा, वह मरकुस 10:35-45 है। इस परिच्छेद में, याकूब और यूहन्ना ने यीशु के राज्य में आदर के स्थान माँगे। तब दूसरे दस चेले महिमा की इस महत्वाकांक्षा पर क्रोधित हो गए। परन्तु यीशु ने उन बारहों को डाँटा। उसने उन सब से सेवा के एक जीवन का अनुरोध किया और अपने स्वयं के जीवन को एक आदर्श के रूप में पेश किया।

> सेवकरुपी नेतृत्व की माँग केवल इतनी है कि अगुवा सेवकाई के जीवन में सक्रिय रहे और पौलुस के शब्दों में, अपने जीवन को दूसरों की सेवा में, दूसरों की सहायता में, और दूसरों को तैयार करने में उण्डेल देने का इच्छुक हो। और इसलिए अगुवा केवल आज्ञा ही नहीं देता कि जाओ और करो- हाँ, आज्ञा दी जाती है परन्तु लक्ष्यों और उद्देश्यों को पूरा करने के मार्ग में अगुवा अगुवाई करता है। और यह मुझे परिश्रम करने के बारे में पौलुस की बात का स्मरण दिलाता है। उसने कहा कि उसने इस संबंध में अपने सारे साथियों से बढ़कर परिश्रम किया। और यह आपको इसका अद्भुत अहसास दिलाता है कि एक सेवकरुपी अगुवा होने का क्या अर्थ है, लोगों के बीच उतरना और बोझ उठाने में सहायता करना और छुटकारे के लिए बोझ उठाना।

रेव्ह. लैरी कोक्रेल

मरकुस 10:45 में इस प्रकार के नेतृत्व के बारे में यीशु के स्पष्टीकरण को सुनें :

> क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया, कि उस की सेवा टहल की जाए, पर इसलिए आया, कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपना प्राण दे। (मरकुस 10:45)

यीशु ने स्पष्ट किया कि नेतृत्व परमेश्वर और अधीनस्थों की सेवा का एक रूप है। नेतृत्व महिमा का एक अवसर नहीं है। इसके विपरीत, इसका परिणाम बहुधा अगुवों के लिए कष्ट के रूप में होता है। यथार्थ में, यीशु जानता था कि दूसरों की सेवा का उसका मिशन अन्ततः उसे मृत्यु की ओर ले जाएगा। परन्तु उसने इसी मिशन को अपनाया। और उसने अपने चेलों को भी इसे अपनाने की आज्ञा दी।

> मरकुस के सुसमाचार में, वह विशेष रूप से इस बात के लिए उत्सुक प्रतीत होता है कि हमें इस बात का संदेश मिले कि यीशु ही वह कष्ट सहने वाला सेवक है जिसके बारे में पुराने नियम में भविष्यवाणी की गई है। सुसमाचार के पूर्वार्द्ध में राजा के रूप में यीशु की भूमिका पर अत्यधिक बल दिया गया है, और उत्तरार्द्ध में हम यीशु को कष्ट और मृत्यु की ओर बढ़ते हैं। और संभवतः एक मुख्य पद मरकुस **10:45** है, "मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया, कि उस की सेवा टहल की जाए, पर इसलिए आया, कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपना प्राण दे।" और वह विशेष पद उस संदर्भ में आता है जिसमें चेलों को उस प्रकार के सेवक बनने का प्रोत्साहन मिलता है कि हमारे अधिकारों का प्रयोग न करने के विषय में यीशु हमारा आदर्श है, और हम सुसमाचार के प्रसार और परमेश्वर के राज्य के प्रसार की खातिर अपने

अधिकारों को त्याग देते हैं। और मरकुस वास्तव में हमें इसका एक आदर्श देता है कि कैसे हमें अधिकार नहीं जताना चाहिए, हमें स्वर्ग में सबसे अच्छे स्थानों की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए जैसे कि प्रायः चेलों की प्रवृत्ति थी। इसके विपरीत, हम मसीह के आदर्श का पालन करते हैं जिसने स्वेच्छा से दूसरों की खातिर स्वयं को बलिदान कर दिया, और हम उसी आदर्श का पालन करते हैं।

डॉ. साइमन विबर्ट

अतः यदि हम यह सोचते हैं कि यीशु द्वारा दी गई यह सेवकरुपी नेतृत्व की आज्ञा व्यवहार में कैसी है, तो हम सुसमाचारों में देख सकते हैं कि यीशु कैसे उस प्रकार के नेतृत्व का प्रदर्शन करते हैं। विभिन्न प्रकार के लोगों और उनकी आवश्यकताओं से सामना होने पर जो पहली बात हम यीशु को करते हुए देखते हैं, वह यह है कि यीशु बहुत, बहुत ध्यान से सुनते हैं। वे लोगों से उनके स्थान पर मिलते हैं। यीशु उनके जीवन की भौतिक आवश्यकताओं, उनके जीवन की भावनात्मक आवश्यकताओं पर ध्यान देते हैं; वह केवल उनके शब्दों को नहीं बल्कि उनके अर्थ को समझने के लिए बहुत ध्यान लगाकर सुनते हैं। उदाहरण के लिए, मरकुस के सुसमाचार में हम एक पिता के साथ मुलाकात को देख सकते हैं जिसका पुत्र वर्षों से दुष्टात्मा से ग्रस्त था, इतना कि वह स्वयं को घायल करता था और पिता को यह महसूस नहीं होता है कि अब वह कोई आशा रख सकता है। वह कहता है, "मेरे अविश्वास का उपाय कर।" अतः उसे झिड़कने की बजाय यीशु उसका उत्तर देते हैं और उसके पुत्र को चंगा करते हैं। और फिर हम सुसमाचार के इस मोड़ को देखते हैं, कि यीशु कहाँ जा रहे हैं? यीशु अपने अनुयायियों के पापों का मूल्य चुकाने के लिए अपना प्राण देने यरूशलेम जा रहे हैं। बलिदानी प्रेम की यह अभिव्यक्ति उस समय की संस्कृति के अर्थ में स्वयं के लिए किसी भी महिमा को अलग कर देती है, और फिर अपने अनुयायियों के लिए अपना प्राण देना। सुसमाचार में यीशु इस प्रारूप का प्रदर्शन करते हैं कि वह किस प्रकार लोगों की परवाह करते हैं और उनकी सुनते हैं, और फिर वह कहाँ जा रहे हैं, अपना प्राण देने यरूशलेम जा रहे हैं। यही सेवकरुपी नेतृत्व है।

डॉ. ग्रेग पेरी

यहूदी मसीहारुपी अपेक्षाओं और यीशु की सेवकाई को मन में रखते हुए, आइए हम उन प्रत्युत्तरों पर विचार करते हैं जिन्हें मरकुस मसीह के रूप में यीशु की पहचान के इस पहलू के प्रति अपने पाठकों से चाहता था।

उपयुक्त प्रत्युत्तर

यीशु ने सिखाया कि उसके अनुयायियों को कष्ट सहना पड़ेगा। समाज में उन्हें विरोध का सामना करना पड़ेगा। उनके परिवारों में संघर्ष होंगे। शैतानी ताकतों द्वारा उनकी परीक्षा की जाएगी और उन्हें परेशान किया जाएगा। उन्हें सताया जाएगा और कुछ को मार डाला जाएगा। फिर भी उसने उनकी वफादारी और स्थिरता की माँग की। सुनें यीशु मरकुस 12:30 में इस विचार को संक्षेप में कैसे बताते हैं :

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण, और अपनी सारी बुद्धि, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना। (मरकुस 12:30)

यहाँ, अपने लोगों के जीवनों पर परमेश्वर की माँगों की पूर्णता पर बल देने के लिए यीशु ने व्यवस्थाविवरण 6:5 का उल्लेख किया। हमें अपने अस्तित्व और जीवन के प्रत्येक पहलू में पूरी तरह से परमेश्वर के प्रति समर्पित होना है।

यीशु का अनुसरण करने में बलिदान और कष्ट शामिल है। परन्तु फिर भी वह हम से यह माँग करता है कि हम पूरी तरह से उसके प्रति समर्पित रहें और उसके राज्य की खातिर ऐसा जीवन व्यतीत करें जिससे संसार घृणा करता है।

एक उदाहरण के रूप में, मरकुस 10:17-31 में धनवान, युवा सरदार की कहानी पर विचार करें। वह यीशु के पास यह पूछने के लिए आया कि अनन्त जीवन का वारिस होने के लिए वह क्या करे, और यीशु ने उसे अपनी सारी संपत्ति बेचकर कंगालों को देने के लिए कहा। यीशु की शर्तें धनवान युवा सरदार की क्षमता से कहीं बढ़कर थी, इसलिए वह उदास होकर चला गया। यीशु ने अपने चेलों से कहा कि इससे उन्हें चकित नहीं होना चाहिए क्योंकि "धनवान के परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने से ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।" उसने आगे कहा कि उसके अनुयायियों को अपने परिवार, घरों, और संपत्तियों को पीछे छोड़ने के लिए तैयार रहना होगा। उन्हें सताव सहने के लिए तैयार रहना होगा। उन्हें उसकी खातिर शहीद होने के लिए भी तैयार रहना था। जैसे यीशु ने मरकुस 8:34-35 में कहा था :

> जो कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने आप से इनकार करे और अपना क्रूस उठाकर, मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिए अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा। (मरकुस 8:34-35)

किसी न किसी प्रकार प्रत्येक मसीही के पास एक क्रूस है। परन्तु उद्धार की महिमा और आशीष बलिदान के योग्य है।

> क्योंकि एक ओर, यीशु ने कहा क्रूस उठाओ परन्तु पतरस के जीवन में ऐसे पल हैं जहाँ उसके हाथों में देखने पर तलवार दिखाई देती है। वह महायाजक के दास का कान काट देता है। आप देख रहे हैं, सदियों से कलीसिया की यही दुविधा रही है, तलवार या क्रूस? क्या हम मानवीय प्रवीणता या मानवीय विधियों या मानवीय बुद्धि के मार्ग पर चलते हैं? या फिर स्वयं का इनकार करने और यीशु के पीछे चलने के द्वारा हम अपने अहम को मारते हैं? और यीशु ने यह स्पष्ट किया कि परमेश्वर अपने पुत्र के द्वारा जो महिमा देता है वह केवल क्रूस के मार्ग पर चलने से, यीशु का अनुसरण करने से मिलती है। अतः, सवाल यह नहीं है कि हम कैसे समझौता कर सकते हैं या कहाँ समझौता कर सकते हैं, परन्तु यह कि क्या हम यीशु का अनुसरण करेंगे? और तब लोग उस उद्देश्य के प्रति समर्पित होते हैं, जब वे समझते हैं कि यीशु का मार्ग क्रूस का मार्ग है, और उसके पीछे चलने का अर्थ स्वयं के लिए मरना और उसके लिए जीना है, तो जब तक हम अपना ध्यान क्रूस-आधारित मसीही जीवन पर रखते हैं तब तक समझौता करने या न करने, एकता या विभाजन के ये सवाल बड़ी सीमा तक अपने आप ही हल हो जाएँगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

रेव्ह. माइकल ग्लोडो

शिष्यत्व एक कठिन मार्ग है। यथार्थ में, यीशु के अनुसार यदि हम अपनी सामर्थ पर निर्भर हैं तो परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना असंभव है। परन्तु सुनें मरकुस 10:27 में यीशु ने किस प्रकार अपने चेलों को उत्साहित किया :

> मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से हो सकता है; क्योंकि परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है। (मरकुस 10:27)

यीशु की कठोर शर्तों के अनुसार उसका पालन करने की सामर्थ हमारे अन्दर नहीं है। परन्तु परमेश्वर में है। और वह हमारे अन्दर की उस सामर्थ का प्रयोग यह सुनिश्चित करने के लिए करता है कि हम उसके राज्य में प्रवेश करें।

> एक बहुत ही बुरी बात जिसे हम करने की कोशिश कर सकते हैं, वह यह है कि हम आत्मा की सामर्थ के बिना मसीह में बढ़ने, पवित्र होने, और पवित्रता एवं धार्मिकता में बढ़ने की कोशिश कर सकते हैं। इससे परमेश्वर प्रसन्न नहीं होता, यह उस परमेश्वर पर निर्भर रहना नहीं है जिसने शुद्ध करने के लिए हमें बचाया है। अतः हमारे जीवन से निकलने वाली किसी भी भलाई के लिए, हमारे जीवन में किसी भी उन्नति के लिए आत्मा का कार्य, आत्मा की सामर्थ अत्यन्त आवश्यक है। आश्चर्यजनक बात यह है कि जैसे मानवता में यीशु हमारा उदाहरण है, उसके जीवन में हम बिल्कुल यही देखते हैं। पवित्र आत्मा आता है और मसीह के जीवन में कार्य करता है, सेवकाई की शुरूआत में बपतिस्मा के समय उसे योग्य बनाता है और सामर्थ देता है और अगुवाई करता है और उसका अभिषेक करता है, और उससे भी पहले कुँवारी के गर्भधारण को संभव बनाता है जहाँ हम परमेश्वर को मनुष्य का रूप धारण करते हुए देखते हैं। हम देखते हैं कि आत्मा परीक्षा के लिए उसे मरूभूमि में ले जाता है। आत्मा आता है और उसकी सेवा करता है। आत्मा मसीह के जीवन में सामर्थ देने वाला कार्य है। और इसलिए, यह निश्चित रूप से मसीह के अनुयायियों के जीवनों में भी सामर्थ देने वाला कार्य है।

डॉ. के. एरिक थोनेस

मरकुस रोम के अपने मूल पाठकों को यह बताना चाहता था कि उनका कष्ट और सताव इस बात का चिन्ह है कि वे मसीह के सच्चे अनुयायी हैं। यह अपने राज्य के लिए यीशु की योजना का भाग था। और मरकुस इस तथ्य के द्वारा अपने पाठकों को प्रोत्साहित करना चाहता था। वह उन्हें यह भरोसा दिलाना चाहता था कि परमेश्वर उन्हें कठिनाईयों के बीच स्थिर रहने की सामर्थ देगा जैसे उसने यीशु को सामर्थ दी थी, ताकि वे साहस और आशा के साथ अपने कष्टों का सामना कर सकें।

यीशु अब भी धीरे-धीरे अपने राज्य को ला रहा है; वह अब भी कष्ट का उस अन्त के माध्यम के रूप में प्रयोग कर रहा है; और वह अब भी हमें स्थिर रहने की सामर्थ दे रहा है। यीशु और उसके राज्य की खातिर कष्ट से हमें निराश नहीं होना चाहिए; इससे हमें सांत्वना और प्रेरणा मिलनी चाहिए। हम इसलिए कष्ट सहते हैं

क्योंकि हम उसके सेवक हैं। और हमें भरोसा है कि एक दिन हमारे कष्टों का हमारी समझ से परे आशीषों का प्रतिफल दिया जाएगा- आशीषें उन कठिनाईयों से बढ़कर होंगी जिन्हें हम सहन करते हैं।

यीशु की पहचान का दूसरा पहलू जिस पर हम विचार करेंगे वह विजयी राजा के रूप में उसकी भूमिका है जो परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी पर लाता है।

विजय प्राप्त करनेवाला राजा

पुराने नियम ने यह स्पष्ट किया कि मसीहा दाऊद का वंशज होगा और उसका काम दाऊद के सिंहासन की महिमा को वापस लौटाना और सर्वदा के लिए इस्राएल पर राज्य करना होगा। इसकी भविष्यवाणी को हम भजन 89, 110 व 132, और पुष्टि को मरकुस 12:35 में देखते हैं। अतः जब भी मसीह या मसीहा के रूप में यीशु की पहचान की गई, तब उसकी शाही प्रतिष्ठा की भी पुष्टि की गई। उदाहरण के लिए, इसी कारण मरकुस 10:47-48 में उसे "दाऊद का पुत्र" कहा गया था। और स्वयं यीशु ने मरकुस 14:61-62 में महासभा के सामने मुकद्दमे के समय और मरकुस 15:2 में पिलातुस के सामने मुकद्दमे के समय सबके सामने मसीहारुपी राजा होने का दावा किया।

हम विजयी राजा के रूप में यीशु की भूमिका के तीन पहलुओं पर विचार करेंगे जिन पर मरकुस ने बल दिया है। हम इस तथ्य पर विचार करेंगे कि यीशु ने अपने राज्य की घोषणा की। हम यह देखेंगे कि उसने अपनी सामर्थ और अपने अधिकार का प्रदर्शन किया। और हम देखेंगे कि उसने अपने शत्रुओं को जीत लिया। आइए हम इस तथ्य से आरम्भ करते हैं कि यीशु ने अपने राज्य की घोषणा की।

राज्य की घोषणा की

याद करें कि मरकुस ने मरकुस 1:14-15 में यीशु की सुसमाचार की सेवकाई को संक्षेप में किस प्रकार बताया था, जहाँ उसने यह जानकारी दी :

> यूहन्ना के पकड़वाए जाने के बाद यीशु ने गलील में आकर परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया और कहा, "समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।" (मरकुस 1:14-15)

यीशु की प्रचार की सेवकाई का मुख्य उद्देश्य सुसमाचार या खुशखबरी की घोषणा करना था कि परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है और मन फिराने तथा विश्वास करने वाले सब लोगों को इसकी आशीषें मिलेंगी।

यीशु ने अपने चेलों को राज्य के रहस्य सिखाने के द्वारा भी उसकी घोषणा की। वास्तव में, इसीलिए वह प्रायः दृष्टान्तों में सिखाया करता था- ताकि उन लोगों पर राज्य के रहस्यों को प्रकट करे जो चुने हुए हैं और उन से छिपा रखे जो चुने हुए नहीं हैं। सुनें मरकुस 4:11-12 में यीशु ने अपने चेलों से क्या कहा :

> उसने उनसे कहा, तुम को तो परमेश्वर के राज्य के भेद की समझ दी गई है, परन्तु बाहर वालों के लिए सब बातें दृष्टान्तों में होती हैं। इसलिए कि वे देखते हुए देखें और उन्हें सुझाई न पड़े और सुनते हुए सुनें भी और न समझें; ऐसा न हो कि वे फिरें, और क्षमा किए जाएँ। (मरकुस 4:11-12)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

और निःसन्देह, यीशु ने प्रायः परमेश्वर के राज्य का वर्णन किया। उदाहरण के लिए, मरकुस 10 में उसने उन लोगों की पहचान की जो आसानी से परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर सकते हैं, जैसे कि बच्चे, और वे जो बड़ी कठिनाई से प्रवेश करेंगे, जैसे कि धनवान।

विजयी राजा के रूप में यीशु की भूमिका के जिस दूसरे पहलू का हम वर्णन करेंगे वह यह है कि उसने पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के मुखिया के रूप में अपनी सामर्थ और अपने अधिकार का प्रदर्शन किया।

सामर्थ एवं अधिकार का प्रदर्शन किया

यीशु ने राजा के रूप में अपनी सामर्थ और अपने अधिकार का प्रदर्शन मुख्यतः अपने चमत्कारों के द्वारा किया। उदाहरण के लिए, मरकुस 4:41 कहता है कि सृष्टि उसकी आज्ञा मानती है। और दुष्टात्माएँ प्रायः उसकी पहचान परमेश्वर के पुत्र के रूप में करती थी, जैसे हम मरकुस 1:24, 3:11, और 5:7 जैसे स्थानों में देखते हैं। प्रकृति और दुष्टात्माओं पर अपनी इच्छा को पूरा करने की यीशु की योग्यता इस बात का दृढ़ प्रदर्शन थी कि वह परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी पर लाने के लिए आया था। और उसकी आश्चर्यजनक चंगाइयों का भी यही सच है। राज्य की आशीषों में जीवन और मृत्यु शामिल हैं। अतः, जब यीशु ने लोगों को चंगा किया तो वह अपने शाही विशेषाधिकार के अनुसार राज्य की आशीषें उन्हें बाँट रहा था।

> यीशु ने संभवतः कम से कम तीन कारणों से चमत्कार किए : पहला, वह अपना तरस दिखाना चाहता था, कष्ट सहने वाले लोगों के प्रति परमेश्वर का तरस। अतः वह लोगों को इसलिए चंगा कर रहा है क्योंकि वह उन पर करूणा करता है, उन पर तरस खाता है। वह उनकी आवश्यकताओं को पूरा करना चाहता है परन्तु ऐसा करने के द्वारा वह इस सत्य का विज्ञापन भी कर रहा है कि वह कौन है, कि वह मसीहा है और वह राज्य का उद्धार ला रहा है। अतः चमत्कार उसकी पहचान के चिन्ह हैं जो केवल यह संकेत ही नहीं देते हैं कि परमेश्वर होने के कारण वह ये कार्य कर रहा है, बल्कि यह संकेत देते हैं कि वही मसीहा है। और तीसरी विशेषता यह है कि चमत्कार यह संकेत देते हैं कि मसीहारुपी उद्धार आ चुका है। परमेश्वर द्वारा प्रतिज्ञा किया गया युग इतिहास में आ चुका है और अब वह बीमारियाँ लाने वाले श्रापों को पलट रहा है, इसलिए वह लोगों को चंगा कर रहा है। भोजन और जल की सीमितता थी, अतः वह भोजन और दाखरस बहुतायत से दे रहा है और इस प्रकार चमत्कार इतिहास में परमेश्वर के परिवर्तनों को ला रहे हैं क्योंकि वह मसीहा है और इसे हमारे जीवनों में लाना उसका मिशन है।
>
> **डॉ. जॉन मैककिन्ले**

चमत्कार करने के अलावा, यीशु ने अपनी शाही सामर्थ और अधिकार को दूसरे तरीकों से भी दिखाया। उदाहरण के लिए, मरकुस 1:16-20 में यीशु ने चेलों को अपने पीछे आने के लिए अपने घरों, परिवारों, और व्यवसायों को छोड़कर आने के लिए कहा। उसने केवल एक बुद्धिमान सुझाव नहीं दिया बल्कि उसने जीवन को बदलने वाले एक जवाब की माँग की। वास्तव में, वह सुसमाचार सुनने वाले प्रत्येक व्यक्ति को यही आज्ञा देता है, और आज भी उसी जवाब की अपेक्षा रखता है। प्रत्येक मनुष्य पर यह जिम्मेदारी है कि वह यीशु की आज्ञा माने, अपने जीवन को उसके प्रति समर्पित करे और जहाँ भी वह ले जाता है उसका अनुसरण करे।

संभवतः यीशु के अधिकार का सबसे यादगार उदाहरण वह है जब मरकुस 2:3-12 में उसने लकवे के रोगी के पाप क्षमा किए। यीशु और शेष सब लोग भी जानते थे कि केवल परमेश्वर ही पापों को क्षमा कर सकता है। परन्तु आश्चर्यजनक रूप से, यीशु ने उस व्यक्ति से परमेश्वर से क्षमा माँगने के लिए नहीं कहा; उसने अधिकार के साथ उस व्यक्ति कि पाप क्षमा किए। इसके फलस्वरूप, यह कथन केवल उस व्यक्ति की क्षमा का ही नहीं बल्कि यीशु के शाही अधिकार का भी भरोसा था। उस व्यक्ति के पापों को क्षमा करने के द्वारा यीशु ने दिखाया कि उसके पास परमेश्वर के राज्य के अन्दर न्याय करने का दैवीय अधिकार है। और क्षमा के तुरन्त बाद व्यक्ति को चंगा करने के द्वारा यीशु ने यह साबित किया कि उसका सन्देश वास्तव में परमेश्वर की ओर से आया है।

और निःसन्देह, पापों की क्षमा करने का यीशु अधिकार वह सबसे बड़ा कारण जिसके जिए हमें उसका अनुसरण करना है। उसके द्वारा, हमारे पाप मिटाए जा सकते हैं ताकि परमेश्वर से हमारा मेल हो सके। उसके शत्रु बने रहने की बजाय हम उसके राज्य के साथ आने वाली सारी अनन्त आशीषों के साथ उसके राज्य के वफादार नागरिक बन सकते हैं।

विजयी राजा के रूप में यीशु की भूमिका का तीसरा पहलू जिसका हम वर्णन करेंगे वह यह है कि उसने अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त की।

शत्रुओं पर जय प्राप्त की

यीशु के जीवनकाल में उसके बहुत से शत्रु थे : उसका विरोध करने वाले यहूदी अगुवे, उसे अस्वीकार करने वाले अविश्वासी, उसके द्वारा निकाली गई दुष्टात्माएँ, और अन्य शत्रु भी। और अपने शत्रुओं के साथ टकराव की प्रत्येक घटना में वह विजयी हुआ। उसने उनके तर्कों को पछाड़ा; उसने उनके षड़यंत्रों को असफल कर दिया; उसने लोगों को उनके दमन से छुड़ाया। उसने उनके षड़यंत्रों के द्वारा अपने उद्देश्यों को पूरा किया, उन्हें अनुमति दी कि वे उसे क्रूस पर चढ़ाएँ ताकि वह पाप के लिए प्रायश्चित बन सके। इन सारी विजयों ने साबित किया कि यीशु वास्तव में मसीहा था, परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी पर लाने हेतु दाऊद के वंश का राजा आ गया था।

मरकुस द्वारा बार-बार वर्णित शत्रुओं का एक समूह दुष्टात्माएँ थी। वास्तव में, मरकुस ने दुष्टात्माओं और शैतानी ताकतों पर यीशु के अधिकार पर किसी भी अन्य सुसमाचार लेखक से बढ़कर बल दिया है। मरकुस ने अपने पाठकों के ध्यान को यीशु द्वारा दुष्टात्माओं पर नियंत्रण की ओर लगाए रखा।

मरकुस के लिए, यीशु और दुष्टात्माओं के बीच की यह लड़ाई इस बात का प्रमाण थी कि यीशु परमेश्वर के राज्य को ले आया था। राज्य की उपस्थिति का आशय संघर्ष के बिना शान्तिपूर्ण जीवन नहीं है। इसके विपरीत, इसका अर्थ यह था कि शैतानी ताकतों और दुष्टता के राज्य से युद्ध करने और अन्ततः उसे हराने के लिए यीशु का राज्य आ गया था। रोम के मसीहियों के लिए, इसका अर्थ यह था कि उनके कष्ट विशाल आत्मिक युद्ध का एक भाग थे। और चाहे कुछ समय के लिए उनका शोषण और उन पर अत्याचार किया जाए, फिर भी वे विजयी पक्ष में हैं और एक दिन उन्हें पूर्ण विजय मिलेगी। और आज हमारे बारे में भी यही सच है।

दुष्टात्माओं पर यीशु की सामर्थ चाहे कितनी भी आश्चर्यजनक क्यों न हो परन्तु उसकी महानतम विजय स्वयं मृत्यु पर थी, जिसे 1 कुरिन्थियों 15:26 में पौलुस ने "अन्तिम शत्रु" कहा है। जैसे हम देख चुके हैं, मरने से पहले यीशु ने अपने चेलों को बार-बार यह समझाया था उसकी मृत्यु उसकी विजय का माध्यम है। मृत्यु एक शत्रु थी। परन्तु यीशु ने इस शत्रु पर जय पाई और उसका अपने उद्देश्यों के लिए प्रयोग किया। एक

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उदाहरण के रूप में, सुनें मरकुस 14:24-25 में अन्तिम भोज के दौरान किस प्रकार यीशु ने अपने चेलों को आश्वस्त किया :

> उस ने उन से कहा, "यह वाचा का मेरा वह लहू है, जो बहुतों के लिए बहाया जाता है। मैं तुम से सच कहता हूँ, कि दाख का रस उस दिन तक फिर कभी न पीऊँगा, जब तक परमेश्वर के राज्य में नया न पीऊँ।" (मरकुस 14:24-25)

एक नम्र चरवाहे के रूप में, यीशु ने वायदा किया कि निराशा का कारण बनने की बजाय, उसकी मृत्यु पाप और उसके दुष्परिणामों पर परमेश्वर की वाचा की विजय होगी। यीशु ने यह वायदा भी किया कि यह अपने चेलों के साथ उसका अन्तिम भोज नहीं होगा। गिरफ्तारी, मुकद्दमों, कष्ट और मृत्यु की उन सारी भयानक घटनाओं के बाद जो उसके साथ होने वाली थी- अपने राज्य की पूर्णता में अपनी सारी महिमा के साथ वह फिर से उनके साथ पीएगा। प्राचीन संसार में मरकुस के मूल पाठकों से लेकर सदियों बाद की कलीसिया तक, प्रभु भोज के हमारे समारोह हमें याद दिलाते हैं कि मसीह की विजय अन्ततः हमारे सारे कष्टों को जीत लेगी। एक दिन, हमें स्वयं यीशु के साथ विजय भोज में शामिल होने का प्रतिफल मिलेगा।

क्रूस पर चढ़ाए जाने, मृत्यु, और दफनाए जाने में यीशु ने कुछ समय के लिए मृत्यु को स्वयं पर अधिकार करने दिया ताकि वह हमें पाप से छुड़ा सके। परन्तु वह उस अधिकार के अधीन नहीं रहा। अपने पुनरूत्थान में उसने मृत्यु को भी जीतकर बिना किसी सन्देह के यह साबित किया कि वही मसीह है, मसीहारुपी राजा जिसे परमेश्वर ने पृथ्वी पर अपने राज्य की पुनः स्थापना करने के लिए भेजा है।

परन्तु यदि यीशु राजा बनने के लिए आया तो क्या इसका अर्थ यह है कि वह असफल हो गया? इस प्रश्न ने अवश्य ही मरकुस के सताव सह रहे पाठकों को परेशान किया होगा, जिस प्रकार इसने प्रत्येक युग में बहुत से मसीहियों को परेशान किया है। आखिरकार, अभी हम यीशु को पृथ्वी पर राज्य करते हुए नहीं देखते हैं। ऐसा नहीं लगता कि उसने वह सब पूरा किया है जिसकी एक मसीहारुपी राजा से अपेक्षा थी।

> मरकुस के सुसमाचार में, सुसमाचार के पूर्वार्द्ध में, यीशु के राजत्व पर अत्यधिक दृढ़ता से बल दिया गया है, अतः यीशु प्रदर्शित करते हैं कि उसके पास बीमारी पर सामर्थ है। वह प्रदर्शित करता है कि उसके पास प्रकृति पर सामर्थ है। वह प्रदर्शित करता है कि वह अपने चारों ओर भीड़ को एकत्रित कर सकता है। और वे सारी बातें जिनकी हम हमारे बीच में एक परमेश्वर-राजा से करने की अपेक्षा रखेंगे। परन्तु विशेषतः मरकुस के सुसमाचार में, चेलों के लिए इस बात को समझना कठिन हो जाता है कि जब यीशु यह घोषणा या पुष्टि करते हैं कि वह राजा है, जैसा कि उन्हें भी लगने लगा था, तभी यीशु कहने लगते हैं कि उसका तिरस्कार किया जाएगा, उसे कष्ट सहना पड़ेगा और वह मारा जाएगा। और मेरे विचार से, आरम्भ में उनके लिए यह समझना कठिन था कि उनके बीच में सेवा करने वाले के रूप में एक राजा आएगा, परन्तु वास्तव में, पीछे मुड़कर देखने से, आने वाले राजा की भविष्यवा]णियों को देखकर, आप यशायाह **53** जैसे अनुच्छेदों को मिला सकते हैं जो एक आने वाले राजा के बारे में बताते हैं, जो कष्ट भी सहेगा और मारा भी जाएगा। और यीशु का विश्वास था कि वह मानवीय पाप की छुड़ौती की कीमत चुकाने वाला था और क्रूस पर अपने प्रताप को वह अलग कर देगा ताकि मानवजाति के पापों का प्रायश्चित बन सके। परन्तु निःसन्देह, वह भी कहानी का अन्त नहीं है क्योंकि फिर यीशु मृतकों में से जी उठा और स्वर्ग पर उठा

> लिया गया और अब वह सारी सृष्टि पर राजा के रूप में विराजमान है और वह जीवतों और मरे हुओं के न्यायी के रूप में वापस आएगा।
>
> **डॉ. साइमन विबर्ट**

यीशु वैसा मसीहा नहीं था जैसी पहली सदी के अधिकाँश लोगों ने अपेक्षा की थी और वह वैसा मसीहा भी नहीं है जिसे आज ज्यादातर लोग चाहते हैं। उसने कष्ट और दासत्व का जीवन बिताया, और उसने अपने राज्य के लोगों को भी ऐसा ही करने के लिए बुलाया। मरकुस 4 में बीज बोने वाले और राई के दाने के अपने दृष्टान्तों में यीशु ने सिखाया कि उसके अनुयायियों को अत्याचार सहना होगा, और ऐसा लगेगा कि उसका राज्य पराजित होने वाला है।

परन्तु उसने यह भी सिखाया कि कुछ लोगों में परमेश्वर के राज्य का वचन जड़ पकड़ता है और फल लाता है। वे आज्ञापालन में परमेश्वर के राज्य को गले लगाते हैं। वे यीशु के पीछे चलते हैं और परमेश्वर के राज्य को बढ़ाते हैं।

राज्य पर थोड़े समय के लिए परदा पड़ा है; यह धीरे-धीरे बढ़ता है; यह कष्ट भी सहता है। परन्तु अन्ततः, परमेश्वर का राज्य अपनी पूर्णता में आएगा। जैसे यीशु ने मरकुस 4:22 में कहा है :

> क्योंकि कोई वस्तु छिपी नहीं, परन्तु इसलिए कि प्रकट हो जाए; और न कुछ गुप्त है पर इसलिए कि प्रकट हो जाए। (मरकुस 4:22)

मरकुस का उसके मूल पाठकों और हमारे लिए सन्देश स्पष्ट है। परमेश्वर का राज्य सताव, कष्ट और शत्रुओं के विरूद्ध संघर्ष करते हुए गुप्त रूप से बढ़ता है। परन्तु यह निश्चित रूप से परमेश्वर की समय सारणी के अनुसार भी बढ़ता है। परमेश्वर के राज्य और यीशु की सेवकाई को रोका नहीं जा सकता। एक दिन यीशु उसे पूरा करने के लिए लौटेगा जिसे उसने आरम्भ किया है। वह अन्तिम और पूर्ण रूप से अपने सारे शत्रुओं को हराएगा और हम महिमा पाकर अनन्त जीवन की अन्तिम अवस्था में प्रवेश करेंगे जिसका कभी अन्त न होगा। उस समय, पुराने नियम की कोई भी भविष्यवाणी अधूरी नहीं रहेगी। यीशु सब कुछ पूरा कर चुका होगा।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने मरकुस के लेखन, उसके मूल पाठकों और लेखन के अवसर के संबंध में मरकुस के सुसमाचार की पृष्ठभूमि पर विचार किया है। हमने उसके सुसमाचार की संरचना और विषयों का भी अध्ययन किया है। और हमने उसके दो मुख्य विषयों पर ध्यान दिया है : कष्ट सहने वाले सेवक और विजयी राजा के रूप में यीशु की पहचान। यदि इन विचारों को ध्यान में रखते हुए हम इस सुसमाचार को पढ़ते हैं तो हम पाएँगे कि हम मरकुस को अधिक पूर्णता से समझते हैं और हम आधुनिक संसार में हमारे अपने जीवनों में उसका बेहतर प्रयोग करते हैं।

मरकुस का सुसमाचार यीशु के चरित्र और सेवकाई के उन पहलुओं पर प्रकाश डालता है जिन पर दूसरे सुसमाचारों में अधिकांश बल नहीं दिया जाता। यह हमें यीशु को अपने चारों ओर के शक्तिशाली, ऊर्जावान, सक्रिय स्वामी के रूप में दिखाता है। परन्तु यह हमें इस बात को भी दिखाता है कि अपनी सामर्थ में

भी यीशु ने स्वेच्छा से कष्ट सहने वाले सेवक की भूमिका को चुना। और मरकुस हमें हमारे प्रभु के उदाहरण के प्रति विविध प्रत्युत्तरों की ओर बुलाता है। वह चाहता है कि हम आश्चर्य में यीशु के चरणों पर गिरें, चुपचाप उसकी सुनें, और पूरी आज्ञापालन के साथ उसके वचनों का प्रत्युत्तर दें। वह चाहता है कि हम यीशु के समान ही परमेश्वर के राज्य के लिए कष्ट सहने के लिए तैयार रहें। और वह चाहता है कि हम यह जानते हुए उत्साहित हों कि जब यीशु ने क्रूस के द्वारा अपने शत्रुओं पर जय पाई तो उसने हमारे लिए भी विजय सुनिश्चित की। और इसी आशा में हम उस दिन तक स्थिर रहते हैं जब यीशु अपने राज्य की पूर्णता में अपनी महिमा के साथ हमें वह विजय देने के लिए लौटेगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।